• वर्ष 49 • अंक 02 • फरवरी 2022

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 49 ● अंक 02 ● फरवरी 2022 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एम. पी. प्रिंटर्स बी-220 फेस-II,
नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध-सम्पादक
सुलेख साथी

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
11. अनमोल वचन
31. समाचारिकी
33. पहेलियां
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
46. क्या आप जानते हैं?
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कविताएं

8. करो रोज पढ़ाई
: राधेलाल 'नवचक्र'

19. बसन्त ऋतु आई
: सुमेश निषाद

19. आया बसन्त
: डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

23. दो बाल कविताएं
: महेन्द्र सिंह शेखावत

27. फूल और तितली
: रामगोपाल राही

27. फूलों का आया मौसम
: रामसागर 'सदन'

39. बसंत की है ऋतु
: गफूर स्नेही

47. बगिया
कीर्ति श्रीवास्तव

47. फूल ...
: महेन्द्र जैन

कहानियां

9. नया पाठ
: राजेश अरोड़ा

10. महानता
: किशोर डैनियल

16. आओ स्कूल चलें
: डॉ. रंजना जायसवाल

21. मीकू खरगोश और ...
: साबिर हुसैन

28. चुहिया की ज़िद
: मीरा सिंह 'मीरा'

29. भय
: गौरी शंकर कुमार

40. अनमोल है सब कुछ
: अजय डिमरी

विशेष/लेख

7. बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के दिव्य वचन

20. कोयल की कुहू-कुहू
: किरण बाला

22. बाज की निगाह बड़ी तेज
: डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

24. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल

25. लोमड़ी शार्क
: परशुराम शुक्ल

30. टमाटर है गुणकारी
: विभा वर्मा

42. गज़ब दुनिया गोरिल्ला की
: कमल सौगानी

43. उड़ने वाली गिलहरी
: कमल जैन

वैल इन टाइम एवं वैलेंटाइन

हर कार्य करने का एक समय होता है। अगर समय पर कार्य न किया जाए तो कई बार पछताना भी पड़ता है। हमने किसी भी जगह की यात्रा करनी होती है तो पहले हम टिकट बुक करवा लेते हैं और एक समयानुसार उस बस, ट्रेन या अन्य साधन तक हमें पहुँचना होता है। तभी हम अपने गन्तव्य पर उचित समय पर पहुँच सकते हैं। इसी प्रकार परीक्षा भवन जाना है तब भी एक निश्चित समय पर जाना होता है और अगर देर हो जाती है तो परीक्षा में भाग भी नहीं ले सकते और निराशा का सामना करना पड़ता है। इसलिए हमें सभी कार्यों को 'वैल इन टाइम' करना चाहिए चाहे वह छोटे-छोटे ही क्यों न हों। फिर यह हमारी आदत बन जाएगी और बड़े-बड़े कार्यों को भी हम निश्चित समय में करते हुए मंजिल तक पहुँच सकते हैं।

हम सभी शिशु रूप में एक निश्चित समय पर इस दुनिया में आए। सबसे पहले हमें जब कुछ भी बोध नहीं था, उस समय हमें अपनी माँ का प्यार, प्रेम, स्नेह की भरपूर अनुभूति मिली। माता-पिता, बहन-भाई, मित्र, रिश्तेदारों का भी बहुत प्यार मिला। वह क्षण हमारे जीवन के अनमोल क्षण थे जिसको हम अगर याद करें तो भी याद आना मुश्किल हो जाता है लेकिन हमारे हृदय के अन्तर एक निश्छल प्रेम की छाप हमेशा के लिए अंकित हो जाती है। जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं। हम अनेकों कार्यों में, जीवन को एक नई दिशा देने में व्यस्त हो जाते हैं। फिर हमारा उद्देश्य एक सफल, प्रतिष्ठत, धन-धान्य से मजबूत, अच्छा मकान, व्यापार इत्यादि बन जाता है। यहीं से जीवन में एक भाग-दौड़, प्रतिस्पर्धा का जन्म होता है और हम इन्हीं वस्तुओं को प्राप्त करने में लगे रहते हैं।

जब कभी व्यक्ति को सफलता नहीं मिलती तो व्याकुल हो उठता है और क्रोधित भी। इन्हीं सबके कारण ही वह खोया-खोया रहता है और कुछ न कुछ ढूंढता रहता है कि कैसे सन्तुष्ट हो सकता हूँ? फिर कोई उसे प्रेम से, प्यार से समझाए, आश्वस्त करे कि जीवन तो प्रेम से जीने का नाम है, कर्म करना हमारा कर्तव्य है और फल की आकांक्षा महत्वपूर्ण भी है परन्तु फिर भी फल मिलना केवल परिस्थितिवश होता है। जो भी मिलता है उसे प्रेमपूर्वक ग्रहण करना ही हमारे लिए उस समय का प्रसाद ही होता है।

हमें जन्म से ही प्रेम मिला, हमारा 'वैलेंटाइन डे' तो उसी दिन ही आरम्भ हो गया था। हमें जितने भी लोगों ने प्यार से अपनी गोद में उठाया, चलना सिखाया, शिक्षा दी, गुरुजनों से दीक्षा मिली, जीवन में आगे बढ़ने का ढंग दिया, हमारे जीवन में प्रेम की ज्योति जलाई, ज्ञान रूपी दीपक देकर हमारे जीवन का शृंगार किया। वह वास्तव में हमारे प्रेम के पथ-प्रदर्शक बनें परन्तु हमारे जीवन में एक ऐसी महान विभूति ने अपना पूरा जीवन प्रेम-मय होकर, प्रेम बांटा, प्यार बांटा केवल मुस्कुराहट से ही सबका दिल जीता। हमारे प्रेम-प्यार की साकार प्रतिमा– सत्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज जिनका जन्म 23 फरवरी 1954 को हुआ था, हम सभी आपके प्यार, सत्कार, दुलार को नमन करते हैं और आपके प्यार को हम भी बांट सकें ऐसी कामना करते हैं ताकि कहीं देर न हो जाए, ''वैल इन टाइम भी वैलेंटाइन भी।''

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 246

आस न रक्खीं माया उत्ते आस न रक्खीं बन्दयां ते।
आस न रक्खीं रिश्तयां उत्ते आस न रक्खीं धन्दयां ते।
आस न रक्खीं अकलां उत्ते समझां अते पढ़ाईयां ते।
घर बार ते पुत्तर धीआं दौलत अते कमाईयां ते।
कहे अवतार आस रख इक दी जो कण कण विच वस रिहै।
रमे राम दा लओ आसरा जो गुर पूरा दस रिहै।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि माया पर आस मत रखना और न ही संसार के लोगों पर उम्मीद रखना। आशा रखनी है तो केवल इस रमे-राम पर रखनी है क्योंकि यही हमेशा साथ देने वाला है। माया पर भरोसा रखना ठीक नहीं है। माया का अर्थ केवल धन नहीं होता। हमारा मन जिस वस्तु के लिए लालायित होता हो, हर वह चीज माया है। मन में माया के आते ही हमारी ऊर्जा बाहर की ओर भागने लगती है। हमारा ज्ञान नष्ट होने लगता है। माया में मन लगाने से मन परमात्मा की तरफ न होकर संसार की तरफ हो जाता है। माया की तरह ही इन्सानों पर रखी गई आशा भी व्यर्थ साबित होती है। लोगों को अपने व्यापार-कारोबार और रिश्ते-नाते आदि पर बहुत भरोसा होता है जबकि कठिन समय आने पर ये भी काम नहीं आते।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इन्सान पढ़-लिखकर बहुत बड़ा विद्वान बन जाता है। उसे अपनी पढ़ाई-लिखाई, अक्ल और इल्म पर बहुत भरोसा होता है। किसी-किसी को अपनी दौलत और कमाई पर बहुत भरोसा होता है तो किसी को अपने बेटे-बेटियों से बहुत उम्मीद होती है। इन सब पर विश्वास रखना ठीक है लेकिन एक सीमा तक ही इन पर किया गया भरोसा काम आता है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इस प्रभु-परमात्मा पर आशा रखो। यह जो कण-कण में बस रहा है, यह जो ज़र्रे-ज़र्रे में समाया हुआ है, केवल इसका आसरा ही पक्का है। पूरा सत्गुरु इसी प्रभु का सहारा लेने की बात बताता है। हमें इसी का सहारा लेना है, इसी पर विश्वास रखना है। यह अंग-संग बसने वाला, घट-घट वासी राम ही हमेशा काम आने वाला है। इसके सिवाय जिस-जिस पर भी भरोसा किया गया वह भरोसा एक दिन टूट जाता है। वह हमेशा काम नहीं आता इसलिए दुनिया के इन्सानों पूरे सत्गुरु से इस प्रभु को जानकर इसका अंग-संग एहसास करो। इसका आसरा लो, इस पर विश्वास करो। इसी से शाश्वत खुशी आएगी, इसी से आनन्द प्राप्त होगा।

भावार्थ : हरजीत निषाद

सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सद्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी | पंजाबी | अंग्रेजी | मराठी | नेपाली | गुजराती | बांग्ला | तमिल | तेलुगू | कन्नड | ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

एक नज़र

स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

एक नज़र

निरंकार पर दृढ़ विश्वास रखें और भक्ति मार्ग पर आगे बढ़ें

निरंकारी बाबा गुरबचन सिंह मैमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट

74वां निरंकारी सन्त-समागम 27, 28 व 29 नवम्बर 2021 को

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के दिव्य वचन

- सदा एक-सा रहने वाला अर्थात् अपरिवर्तनीय पक्ष 'सत्य' है। इसीलिए केवल निराकार-प्रभु को ही सत्य कहा जाता है।
- अनुशासन में रहकर मर्यादापूर्वक की गई सेवा का ही महत्व है।
- दया, करुणा, विनम्रता, सहनशीलता, मधुर वाणी ये सुन्दर जीवन के गुण हैं।
- कल्याणकारी वचनों को सुनना ही नहीं बल्कि स्वीकार करके व्यवहारिक रूप भी देना है।
- भ्रम अंधकार है और ब्रह्म उजाला।
- सहनशीलता भक्त का सबसे अच्छा गुण है।
- ब्रह्मज्ञान प्राप्त किये बिना भक्ति आरम्भ नहीं होती है।
- मानव किसी भी भाषा, संस्कृति के हों, सभी एकता के सूत्र में बंध जायें और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को साकार करें।
- परलोक को संवारने के लिए इस लोक में ही प्रयास करने होंगे। लोक भी संवारना है और परलोक भी संवारना है।
- दया की नींव को निकालकर इमारत टिक नहीं सकती।
- परमात्मा को अनेक नामों से पुकारा जाता है लेकिन यह परम अस्तित्व एक ही है।
- महत्वपूर्ण होना अच्छा है लेकिन अच्छा होना ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- भक्ति के मार्ग पर चलकर गुरमत को अपनाये रखें।
- सबके साथ यथोचित सार्थक सम्बन्ध मिलवर्तन कहलाते हैं।
- आत्मा आनन्द के स्रोत से जुड़कर ही आनन्दित होती है।
- ब्रह्मज्ञानियों का संग करके ही जीवन में सवेरा हो सकता है।
- मन के भ्रम मिटने पर ही जीवन में उजाला आता है।
- मानवीय मूल्यों का मजबूत होना बेहद जरूरी है।
- ज्ञान की रोशनी सारे संसार में फैलाते जाएं।
- इन्सान दुनियावी प्रलोभनों में फंसकर यूंही व्यर्थ जीवन गंवाकर चला जाता है।
- दूसरों की कमियां देखने की बजाय स्वयं का अवलोकन करना चाहिए।
- जीवन को सजा-संवारकर धरती के लिए वरदान बनें।
- प्रेम ही एक ऐसी बोली है जिससे बिगड़े काम बन जाते हैं।
- जब प्रभु के रंग में रंगकर जीवन बिताते हैं तब जीवन के सही मायने मिलते हैं।

– संकलन : रीटा

कविता : राधेलाल 'नवचक्र'

करो रोज पढ़ाई

अगर करोगे रोज पढ़ाई,
परीक्षा का भय नहीं रहेगा।
अच्छे अंक सदा लाओगे,
सबका प्यार-दुलार मिलेगा।।

जीवन-परीक्षा में भी तब,
सदा सफलता तुम पाओगे।
घर-परिवार और समाज में,
सचमुच अच्छे समझे जाओगे।।

रोज पढ़ाई जो न करते,
परीक्षा उन्हें सताती है।
भयावह रूप दिखा अपना,
नींद न आने देती है।।

अच्छे अंक नहीं आते जब,
मन दुख से भर जाता है।
सबकी नजरों से गिरकर,
लज्जित होना पड़ता है।।

जीवन-परीक्षा में भी तब,
सदा विफलता मिलती है।
बोझिल सा लगता जीवन,
सब कुछ नीरस दिखता है।।

इन बातों पर गौर करो,
जीवन इनसे सुखद बनेगा।
अगर करोगे रोज पढ़ाई,
परीक्षा का भय भी नहीं रहेगा।।

बाल कहानी : राजेश अरोड़ा

नया पाठ

नंदनवन का राजा शेर सिंह बच्चों से बहुत प्यार करता था। बच्चों के समग्र विकास के लिए उसने कई योजनाएं बनाई थीं। उनमें एक योजना थी– खेल प्रतिभाओं की खोज और उनका सम्मान। राजा प्रतिवर्ष इस योजना में किसी न किसी खेल प्रतियोगिता का आयोजन करवाता और विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित करता। इस वर्ष दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा था।

राजा ने इस आशय की सूचना वन के सभी स्कूलों को भिजवा दी। हनी हिरण, रजी लोमड़ी, बिल्लू सियार, चन्दू कुत्ता, हिनहिन घोड़ा, ढेंचू गधा आदि धावकों ने अपने-अपने नाम अपने स्कूल के प्रधानाध्यापक को लिखवा दिये।

प्रतियोगिता में अभी एक माह बाकी था। ढेंचू ने अपने कक्षा अध्यापक से सुन रख था कि– 'अभ्यास से कठिन से कठिन कार्य भी सरल हो जाता है।' उसे याद आ गया। बस! वो अभ्यास में जुट गया।

प्रतियोगिता का दिन भी आ गया। प्रतियोगिता देखने वन के प्राणी मैदान के दोनों ओर आकर बैठ गये। सभी धावकों ने भी मैदान में अपनी-अपनी पोजीशन ले ली। प्रतियोगिता का शुभारम्भ करते हुए राजा ने आकाश में गोली दागी। गोली की आवाज पर सभी धावक एक साथ दौड़ उठे। कभी कोई धावक आगे निकल जाता तो कभी कोई। दर्शक अपने-अपने धावकों का हौंसला बढ़ाने लगे। अन्त में ढेंचू ने प्रतियोगिता जीत ली। उसने यह प्रतियोगिता जीतकर वन में एक

नया इतिहास रच डाला। करतल ध्वनि से सब प्राणियों ने ढेंचू का स्वागत किया। राजा ने ढेंचू को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

अगले दिन स्कूल के प्रधानाध्यापक हरू हाथी ने हनी हिरण से पूछा– 'हनी, तुम इस वन के सर्वश्रेष्ठ धावक हो। तुमने यह प्रतियोगिता क्यों नहीं जीती?

हनी बोला– सर! मैंने अभ्यास नहीं किया।

प्रधानाध्यापक जी ने फिर पूछा– तुमने अभ्यास क्यों नहीं किया?

हनी ने कहा– सर! मुझे अभ्यास का अवसर नहीं मिला।

तब प्रधानाध्यापक जी बोले– हनी देखो एक बुद्धिमान व्यक्ति अवसर तैयार करता है और तत्परता से उस पर आचरण करता है। किन्तु एक मूर्ख व्यक्ति अवसर की प्रतीक्षा करता रहता है। अवसर तो निर्माण किये जाते हैं वे अपने आप नहीं टपकते।

सुनकर हनी ने प्रधानाध्यापक जी के पांव छुए और भविष्य में उनकी सीख पर चलने का दृढ़-संकल्प कर लिया।

प्रेरक-प्रसंग : किशोर डैनियल

महानता

एक बार सिकन्दर और उनके गुरु अरस्तु एक राह से गुजर रहे थे। रास्ते में एक नदी आयी, उसमें पानी का बहाव काफी तेज था। उसको देखकर गुरु अरस्तु बोले– सिकन्दर तुम यहाँ ठहरो मैं देखता हूँ कि बहाव ज्यादा तेज तो नहीं है।

परन्तु सिकन्दर जिद्द करके बोला– नहीं गुरुजी, आप यहाँ ठहरिए, मैं देखता हूँ।

इस पर गुरु अरस्तु कहने लगे– सिकन्दर तुम छोटे हो कहीं इस अथाह जल में डूब न जाओ, इसलिए मुझे देखने दो।

तुरन्त ही सिकन्दर ने कहा– गुरुजी, मैं डूब भी जाऊँगा तो कुछ भी नहीं होगा। लेकिन यदि आप डूब गये तो इस संसार से एक सितारा छिन जायेगा क्योंकि आप एक महान गुरु हैं। आप मेरे जैसे हजारों और सिकन्दरों को पैदा कर सकते हैं। परन्तु एक सिकन्दर एक भी गुरु अरस्तु नहीं बना सकता।

भारत के महापुरुषों की जन्म तिथियां

महात्मा गाँधी	2 अक्टूबर 1869
बाल गंगाधर तिलक	23 जुलाई 1856
देशबन्धु चितरंजनदास	5 नवम्बर 1870
रवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई 1861
लाला लाजपतराय	28 फरवरी 1865
सुभाष चन्द्र बोस	23 जनवरी 1897
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसम्बर 1884
बल्लभ भाई पटेल	31 अक्टूबर 1875
पं. मदनमोहन मालवीय	25 दिसम्बर 1861

संकलन : श्रीराम प्रजापति

अनमोल वचन

❖ सन्त स्वयं भी आनंद में रहते हैं और दूसरों को भी खुशियां बांटते हैं। वे नफरत, निंदा से दूर रहते हैं क्योंकि जब हम सभी में इस निरंकार को देखते हैं तब हमें कोई भी बुरा नहीं लगता। यदि हम स्वयं को अपनी गलतियों के लिए क्षमा कर देते हैं तब हम दूसरों को क्षमा क्यों नहीं कर सकते?

❖ ज्ञान होने पर भी यह जीवन तभी सुन्दर हो सकता है यदि हम ऐसा करने का निर्णय लेते हैं। जैसे एक दरवाजे का हैंडल नीचे करके खोला जा सकता है परन्तु हम उसे अपनी ओर खींचना शुरू कर दें तो वह कैसे खुलेगा? और यदि हम हैंडल नीचे करके भी खोल रहे हैं तब भी यह ध्यान रहे कि कहीं हमने उस पर मनमत और अहम् की कुंडी या ताले तो नहीं लगा दिए। यदि दरवाजा शीशे का हो तो दूसरी ओर स्पष्ट देखा जा सकता है परन्तु दूसरी ओर की वस्तु प्राप्त करने के लिए दरवाजे को खोलकर पार जाना आवश्यक है। इसी प्रकार ही ज्ञान प्राप्त करके भी यदि हम उस पर अमल नहीं करते तो इसका हमें क्या लाभ मिलेगा?

❖ इस जीवन को सुन्दर बनाने के लिए स्वयं को संवारना होगा और यह केवल ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने से एवं सेवा, सिमरन तथा सत्संग करने से ही संभव है। इस ज्ञान को प्राप्त करने के उपरांत जहाँ समस्त भ्रम-भुलेखे मिट जाते हैं वहीं हम सभी में इस प्रभु का दर्शन करते हुए उनमें अच्छा ही देखते हैं, अच्छा ही सुनते हैं और उनका अच्छा ही करते भी हैं।

– सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

❖ यदि तुम्हें जीवन से प्रेम है तो अपने समय को नष्ट मत करो क्योंकि जीवन उसी से मिला है। – फ्रैंकलिन

❖ क्रोध की अवस्था में दस बार सोचकर बोलो। – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

❖ मनस्वी वही है, जो बीते पर आँसू नहीं बहाता, भविष्य के लिए मनमोहक सपने नहीं संजोता अपितु वर्तमान को ही दुधारू गाय की तरह दुहता है। – गेटे

❖ उल्लास का प्रमुख सिद्धान्त है स्वास्थ्य का प्रमुख सिद्धान्त है कसरत। – टॉमसन

❖ संसार ही महापुरुष को ढूंढता है न कि महापुरुष संसार को। – कालीदास

❖ विश्वास शक्ति है। – राबर्टसन

❖ मानव सेवा से बढ़कर कोई नैतिक नियम नहीं है।

❖ काम की अधिकता नहीं अनियमितता ही आदमी को मार डालती है। – महात्मा गाँधी

❖ लोभी मनुष्य की कामना कभी पूर्ण नहीं होती। – वेदव्यास

❖ कोई अपशब्द कहे खामोश रहो, कोई तमाचा मारे चुप रहो, जब वह चुनौती दे उसका डटकर मुकाबला करो।

❖ धनवान रोगी से तंदुरुस्त मजदूर अच्छा है।

❖ शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं उत्पन्न होती। वह अजेय संकल्प से उत्पन्न होती है।

❖ मनुष्य की परीक्षा उनके कार्यों से होती है, शब्दों से नहीं।

❖ महान कर्म महान मस्तिष्क को सूचित करते हैं। – अज्ञात

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

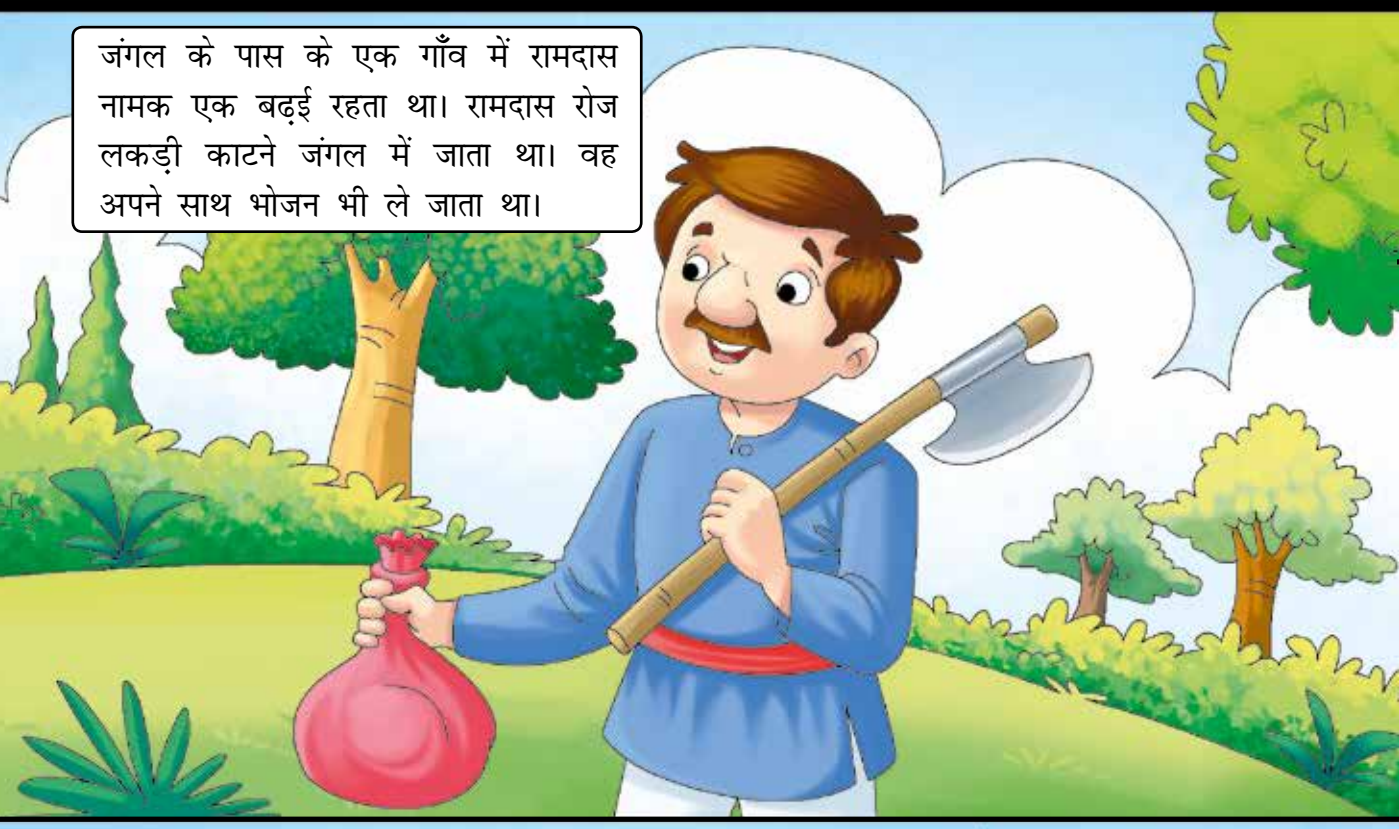

एक दिन शेर ने बढ़ई को देखा। शेर ने सोचा, आज का भोजन मिल गया। शेर को देखते ही बढ़ई के होश उड़ गए। अपनी घबराहट को सँभालते हुए बढ़ई ने कहा, आओ शेर भाई! भोजन करो।
शेर ने कहा, मैं जंगली जीव हूँ। मैं मांस खाता हूँ, अनाज नहीं। लेकिन मैं इसे चखूँगा।

बढ़ई ने मिठाई, नमकीन और मसालेदार चीज़ें शेर को खाने को दी। शेर ने बढ़ई को बिना डरे जंगल में आने-जाने की इज़ाजत दे दी। बढ़ई ने भी शेर को रोज़ खाने के लिए आने को कहा।

अब बढ़ई और शेर में पक्की मित्रता हो गई। शेर को अब स्वादिष्ट चीज़ें खाने को मिलने लगी। शेर ने अब शिकार करना छोड़ दिया।

शेर के शिकार न करने से भेड़िया और कौआ भूखे रहने लगे। एक दिन भेड़िये और कौए ने शेर से पूछा– आप आजकल कहाँ जाते हो और क्या खाकर गुजारा करते हो?

शेर ने कहा– एक आदमी से मेरी मित्रता हो गई है। वह मेरे लिए रोज़ भोजन लेकर आता है।

भेड़िए और कौए ने शेर से बढ़ई को मारने की बात कही। उन्होंने कहा कि उसे मारकर वे भरपेट स्वादिष्ट भोजन कर पाएंगे।

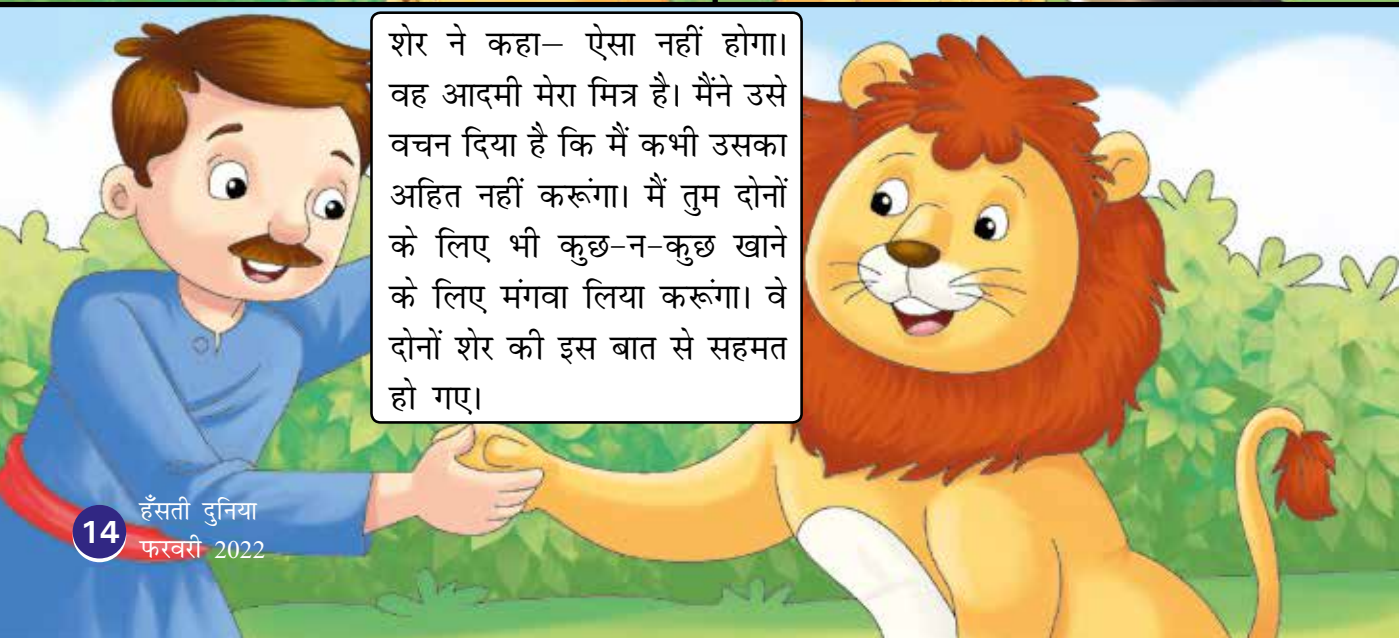

शेर ने कहा– ऐसा नहीं होगा। वह आदमी मेरा मित्र है। मैंने उसे वचन दिया है कि मैं कभी उसका अहित नहीं करूंगा। मैं तुम दोनों के लिए भी कुछ-न-कुछ खाने के लिए मंगवा लिया करूंगा। वे दोनों शेर की इस बात से सहमत हो गए।

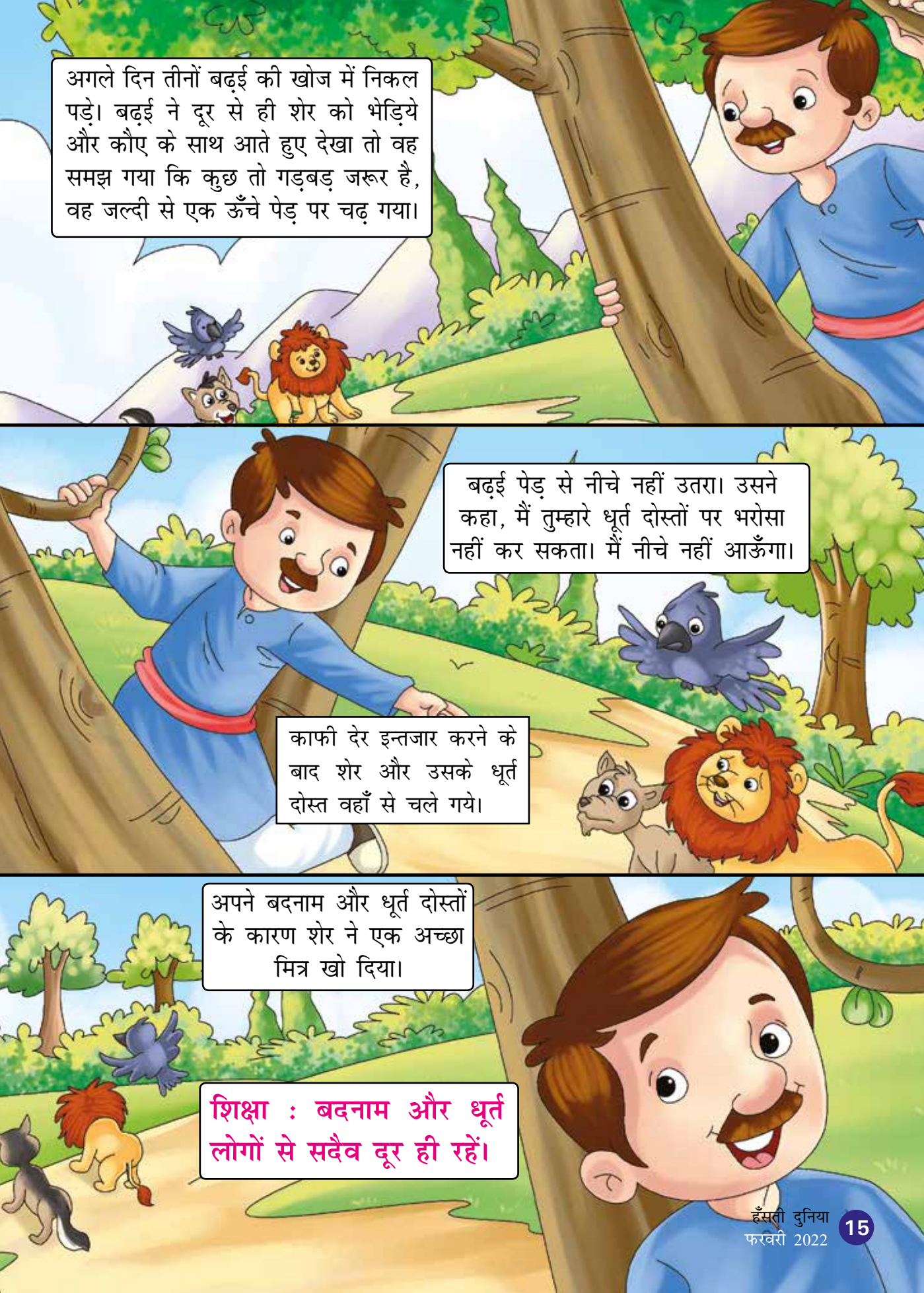
अगले दिन तीनों बढ़ई की खोज में निकल पड़े। बढ़ई ने दूर से ही शेर को भेड़िये और कौए के साथ आते हुए देखा तो वह समझ गया कि कुछ तो गड़बड़ जरूर है, वह जल्दी से एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया।
बढ़ई पेड़ से नीचे नहीं उतरा। उसने कहा, मैं तुम्हारे धूर्त दोस्तों पर भरोसा नहीं कर सकता। मैं नीचे नहीं आऊँगा।
काफी देर इन्तजार करने के बाद शेर और उसके धूर्त दोस्त वहाँ से चले गये।
अपने बदनाम और धूर्त दोस्तों के कारण शेर ने एक अच्छा मित्र खो दिया।
शिक्षा : बदनाम और धूर्त लोगों से सदैव दूर ही रहें।

प्रेरक-कहानी : डॉ. रंजना जायसवाल

आओ स्कूल चलें

जब से कोरोना आया था माता-पिता ने बच्चों को स्कूल भेजना बन्द कर दिया था। सरकार भी किसी तरह का खतरा मोल नहीं लेना चाहती थी। सच भी है जान है तो जहान है। स्कूल के गलियारे, क्लास, खेल का मैदान सब सुनसान पड़े थे। इतने दिनों में कोई झांकने भी नहीं आया था। कभी-कभार 'हैड सर' और 'हैड मैम' आती थी। उनके चेहरे पर एक अजीब सी उदासी और निराशा रहती थी। वो करते भी तो क्या... सालों से काम कर रहे ड्राइवर भैया, दाई जी के घरों के चूल्हे उनकी वजह से जल रहे थे पर मजबूरी में उन्हें भी निकालना पड़ा।

'धप्प।'

तभी दूर से एक बॉल आकर कक्षा छः के दरवाजे से टकराई। ये आवाज सबसे पहले डस्टर ने सुनी। डस्टर... जिसका काम था ब्लैक बोर्ड को साफ करना। ब्लैक बोर्ड और डस्टर में पहले अक्सर लड़ाई हो जाती थी। 'तेरे काले मुँह को साफ करने के चक्कर में मेरा मुँह भी गन्दा हो जाता है।'

तब ब्लैक बोर्ड गन्दा सा मुँह बनाकर कहता– 'मेरी क्या गलती है? ये चॉक है न इसके चक्कर में मैं भी गन्दा होता हूँ और टीचर्स के हाथ और कपड़े भी ...'

इस बात का कितना बुरा माना था चॉक ने...

'पहले की बात और थी अब तो मेरी भी नई वैरायटी आ गई है। मैं कहाँ इतना गन्दा करती हूँ? ये सब बातें तो पुराने जमाने की ...'

वक्त बदला और वक्त के साथ चीजें भी। 'ब्लैक बोर्ड' की जगह 'वाइट बोर्ड' ने ले ली और चॉक की जगह पेन ने, पर डस्टर आज भी मुँह पोंछ रहा था। दूसरों का मुँह पोंछने वाला आज खुद ही गन्दा पड़ा था। धूल की एक मोटी चादर उसके ऊपर भी पड़ी थी। डस्टर ने अपने सिर को हिलाया और अपने माथे की धूल हटाने का प्रयास किया।

'कुर्सी दीदी। आपने कोई आवाज सुनी?'

कुर्सी दीदी की सभी बहुत इज्जत करते थे। आखिर उस पर टीचर्स बैठते थे। उस पर बैठकर न जाने उन्होंने कितनी ज्ञान की बातें बच्चों को सिखाई थी।

'आवाज तो हमने भी सुनी थी।'

बैंच, डेस्क, पर्दे, पंखे सब एक साथ बोले– 'क्या स्कूल खुल गए? बच्चे आ गए? फिर इतना सन्नाटा क्यों है?'

'कितने दिन हो गए बच्चों की आवाज सुने हुए?' मेज पर पड़े हुए लकड़ी के स्केल ने कहा।

मेज ने मुँह बनाकर कहा– 'क्या तुम भी बच्चों का इंतजार कर रही हो? तुम्हारी वजह से मेरी तो पीठ ही अकड़ जाती थी। जब देखो तब कोई न कोई टीचर मेरी पीठ पर तुमको बजाता ही रहता था। सोचो बच्चों की पीठ और हाथ का क्या हाल होता होगा?'

'मुझे भी कोई शौक नहीं है बच्चों को मारने का। पर मेरी दादी कहती थी। बिना मार खाये विद्या नहीं आती। अब तो गनीमत है बच्चों को डांटकर ही छोड़ दिया जाता है। मेरी नानी बताती थी उनके समय में सड़ाक-सड़ाक मारते थे। बच्चों की पीठ लाल हो जाती थी और बच्चे उफ्फ भी नहीं करते थे।'

पंखा बड़ी देर से सबकी बात सुन रहा था। वो थोड़ा ठंडे दिमाग वाला था। दिनभर चलते-चलते वो भी थक जाता था। एक रविवार का ही दिन होता था जब उसे आराम मिलता था पर अब तो हर दिन रविवार की ही तरह हो गया था। मुँह पर जाले लग गए थे और चिड़ियों ने उसके ऊपर घोसलें बना लिए थे। दिनभर गन्दगी। पहले मजाल थी कि धूल का एक कण भी उसके शरीर पर रहता। बच्चों की कमी तो उसे भी बहुत खल रही थी। बच्चों की 'गेम्स पीरियड' के बाद बच्चे पागलों की तरह क्लास रूम की तरफ भागते थे।

वो अक्षय याद है आप सबको। कितना शरारती था? कितनी बेदर्दी से हवा तेज पाने के लिए मेरे कान उमेठ देता था। एक बार योगा क्लास के समय उसने हर्ष का जूता उछालकर मुझ पर चढ़ा दिया था। कितना गुस्सा आया था। पर बच्चे अक्षय की इस हरकत को देख खिलखिलाकर हँस पड़े थे। कहाँ गये वो दिन, न वो बच्चों की खिलखिलाहट है और न ही उनकी मासूम शैतानियां।' पंखा कहते-कहते उदास हो

गया। एक दिन बड़ी मैम ने सितार, ढोलक और तबला भी इसी कमरे में रख दिये थे।

'दीदी आपसे कभी मुलाकात तो नहीं हो पाती थी पर प्रार्थना के समय और आप्शनल के पीरियड के समय आपकी सुमधुर आवाज सुनकर मन झूम जाता था।' पंखे ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

सितार इन सबमें बड़ा था। स्कूल में वाद्ययंत्रों में वही सबसे पहले आया था। उसके चेहरे पर चिंता के भाव उभर आये।

'आप सबसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। सच कह रहे हैं आप सब, ये सन्नाटा ये वीरानी अब अच्छी नहीं लगती, वो खिलखिलाते चेहरे बहुत याद आते हैं। रोज की प्रार्थना हो या फिर 'एनुअल फंक्शन' हमारे साथ के बिना कोई कार्यक्रम नहीं होता था पर आज देखिये। सितार ने गहरी सांस ली।

बेंच और सीट दोनों जुड़वा बहनें थी। बच्चों की शरारतों से वो तंग आ जाती थी पर आज वो भी बहुत दुखी थी।

'आप सबको निकुंज याद है, जब देखो तब हमारी टांगे पकड़कर खींच देता था। ये कोई बात हुई भला। वो रचना तो रोज ही अपनी सब्जी मेरे ऊपर गिरा देती थी और अमित पानी गिराए बिना तो उसका दिन पूरा नहीं होता था पर सच कहूँ जो भी हो, बच्चों के बिना अच्छा नहीं लगता।' कुर्सी दीदी ने आँखें बंद की और कहा– 'आप सभी लोग आँखें बंद करके भगवान से प्रार्थना कीजिए कि सब पहले की तरह हो जाये और स्कूल की रौनक वापस आ जाये।'

कविता : सुमेश निषाद

बसन्त ऋतु आई

वातावरण बना सुन्दर,
बसन्त ऋतु आई।
फूल खिले चंहु ओर,
हरियाली छाई।।

नए-नए पत्ते उगे,
बागों में बहार है।
खुशी लेकर आया,
बसन्त त्योहार है।।

झूम उठी प्रकृति,
पल्लवों का पालना।
फूलों सा वस्त्र पहने,
तितलियों का भागना।।

खुशियां मनाएं सभी,
खुशी हर ओर है।
मन्द-मन्द हवा बहे,
नाच रहे मोर हैं।

कविता : डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

आया बसन्त

मीलों तक सरसों पियराई।
आया बसन्त, मधु ऋतु आई।

आमों में बौर नया आया,
सारे उपवन को महकाया।
पेड़ों, मुंडेरों, खम्भों पर,
गूंजी पक्षियों की शहनाई।।

जाड़े का मौसम भाग चला,
सूरज दादा ने उसे छला।
अब बन्द हुआ कोहरा-पाला,
गुनगुनी धूप है इतराई।।

हम सबने बसन्ती कुरता,
पाजामा पीला सिलवाया।
बनकर बसन्त नाचे-कूदे,
हमको बसन्त ऋतु मन भायी।।

पक्षी जगत : किरण बाला

कोयल की कुहू-कुहू

बसंत ऋतु में कोयल की कुहू-कुहू तो आपने सुनी होगी। उसकी यह कूक बहुत ही कर्णप्रिय होती है। यद्यपि कौवा और कोयल दोनों ही काले हैं लेकिन कोयल अपनी कुहू-कुहू से लोगों का प्यार दुलार पाती है जबकि कौवा अपनी कांव-कांव से लोगों की दुत्कार पाता है।

आमतौर पर मनुष्य सहित सभी प्राणियों में मादा की आवाज मीठी तथा नर की भारी होती है। लेकिन कोयल के साथ स्थिति उलट है। जो कुहू-कुहू आपको मंत्रमुग्ध कर देती है। वह नर कोयल की होती है, मादा कोयल की नहीं। मादा कोयल की आवाज मीठी नहीं होती।

यदि आप कोयल की कूक की नकल करके कूकने लगें तो वह और भी तेज स्वर में कूकने लगती है या फिर चिढ़कर उड़ जाती है। वैसे फरवरी से जुलाई तक यह खूब कूकती है। वर्षाऋतु में भी इसे कूकते देखा गया है।

यदि कोयल को आप ध्यान से देखें तो नर और मादा में थोड़ा अंतर होता है। मादा का रंग राख जैसा होता है जबकि नर का रंग काला होता है। इसके अलावा मादा के शरीर पर कुछ सफेद धब्बे भी देखे जा सकते हैं। दोनों की आँखें लाल तथा चमकीली होती हैं।

कोयल बड़ी चालाक होती है। यह अपने अण्डे कभी नहीं सेती अपितु बड़ी चालाकी से वह कौवे के घोंसले में अपने अण्डे दे आती है। कौवे इन अण्डों को अपना समझ कर सेते हैं। जब अण्डों से बच्चे निकलते हैं तो वे फुर्र से उड़कर अपने समाज में मिल जाते हैं।

कोयल मानव बस्ती में नहीं रहती। वह केवल अण्डे देने के लिए ही बस्ती के करीब रहती है और काम खत्म होते ही जंगल की ओर लौट जाती है। यही कारण है कि बारह महीने यह हमारी बस्ती में दिखाई नहीं देती।

कोयल को बाग की चिड़िया कहा जाता है। हरियाली इसे बहुत पसन्द है। बाग-बगीचों में इसे फल भी खाने को खूब मिलते हैं। फलों के अलावा यह छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़ों को भी बड़े चाव से खाती है।

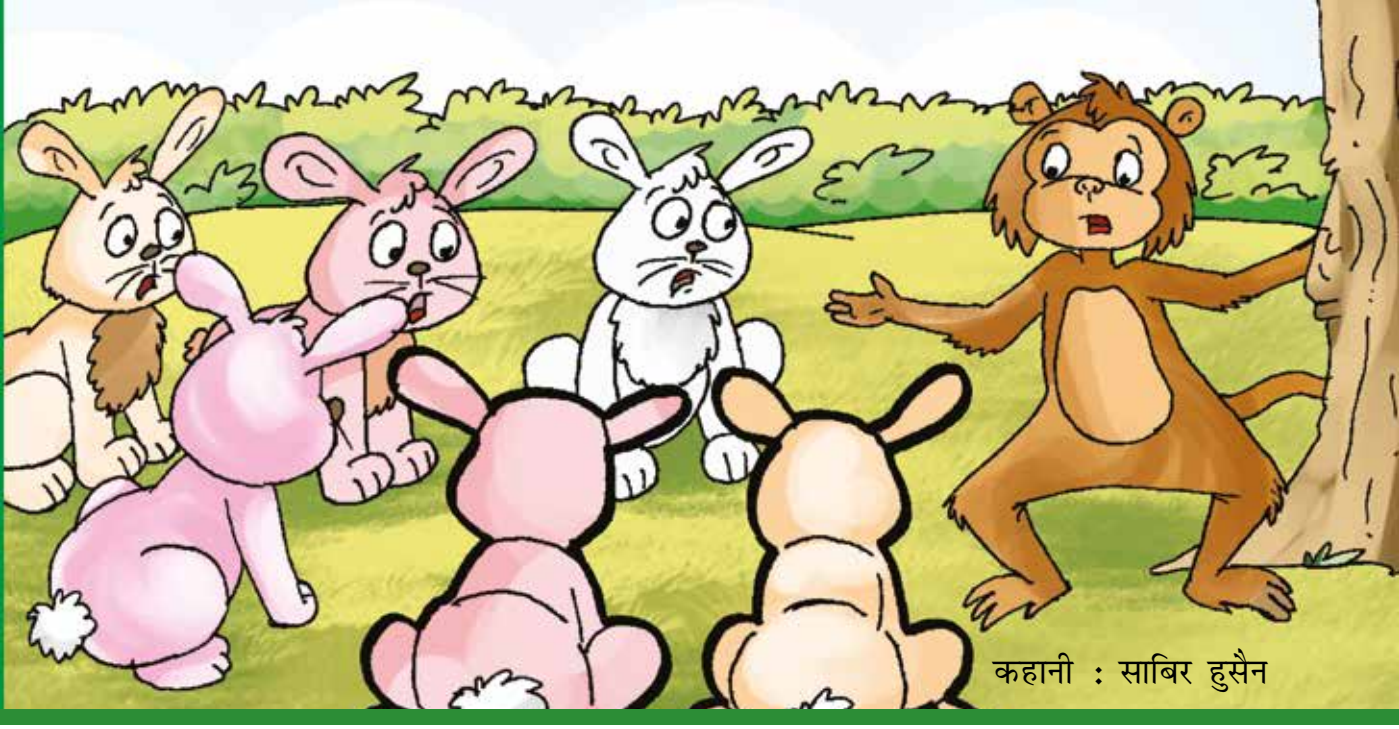

कहानी : साबिर हुसैन

मीकू खरगोश और लकड़बग्घा

बस्ती के सात-आठ खरगोश बैठे दूब-घास खाते हुए बातें कर रहे थे। तभी पास के पेड़ पर बैठे किटकिट बंदर ने पेड़ से छलांग लगायी और खरगोशों के पास जा पहुँचा और चिल्लाकर बोला– भागो! लकड़बग्घा आया।

किटकिट बंदर कूदकर पेड़ पर चढ़ गया। सभी खरगोश भागे तभी लकड़बग्घा वहाँ आ गया लेकिन तब तक सभी खरगोश सुरक्षित अपने बिलों में पहुँच चुके थे। अगर किटकिट बंदर ने उन्हें लकड़बग्घे के आने की सूचना न दी होती तो एक-दो खरगोश लकड़बग्घे का शिकार बन जाते। जंगल के जानवर एक-दूसरे का सहयोग करते हैं। कल ही मीकू खरगोश ने आकर किटकिट बंदर को बताया था कि बड़े बरगद के पेड़ के पास शिकारी पिंजरा रख गये हैं। उसमें केले आदि फल रखे हैं जो भी बंदर केला उठाने पिंजरे में जाएगा वह फंस जाएगा। किटकिट बंदर ने मीकू खरगोश का धन्यवाद किया। उसने सभी बंदरों को समझा दिया कि कोई पिंजरे में केले लेने न घुसे वरना उसी में बंद हो जाएगा और शिकारी उसे पकड़ ले जायेंगे।

उस दिन बस्ती के खरगोश मैदान में खेल रहे थे तभी लकड़बग्घा आ गया था। जब तक खरगोश भागते, लकड़बग्घे ने एक खरगोश को पकड़कर मार दिया था। लकड़बग्घा जान गया था कि यह खरगोशों की बस्ती है। इसलिए वह रोज ही आने लगा।

लकड़बग्घे ने एक बिल में खरगोश को घुसते देखा था। वह अपने पंजों से उस बिल को खोदने लगा।

'यह लकड़बग्घा तो हमारी जान के पीछे ही पड़ गया है।' मीकू खरगोश बोला।

'अब तो कुछ करना ही पड़ेगा।' मीकू खरगोश कहते हुए बिल के बाहर आ गया। उसके दिमाग में लकड़बग्घे से छुटकारा पाने की युक्ति आ गई थी।

'अरे कहाँ जा रहे हो, यह लकड़बग्घा तुम्हें मार डालेगा।' किट्टू खरगोश बोला।

लकड़बग्घे ने मीकू खरगोश को मैदान में देखा तो उस पर छलांग लगा दी लेकिन उससे पहले मीकू ने छलांग लगा दी और एक ओर भागने लगा। लकड़बग्घा उसके पीछे दौड़ पड़ा। मीकू तेजी से भागता और आगे जाकर रूक जाता। लकड़बग्घा उसे रूका देखकर उसे पकड़ने के लिए और तेज दौड़ने लगता। लकड़बग्घे के पास आते ही मीकू फिर भागने लगता। कई बार ऐसा लगा कि लकड़बग्घा मीकू को पकड़ लेगा लेकिन वह बचकर निकल जाता।

भागते-भागते मीकू खरगोश वहाँ पहुँच गया जहाँ शिकारियों ने बड़ा-सा पिंजरा लगा रखा था। वह खुला हुआ था और उसके अंदर फल रखे थे। मीकू भागकर पिंजरे के पीछे इस प्रकार बैठ गया कि दूर से देखने पर ऐसा लग रहा था जैसे मीकू पिंजरे में बैठा हो। लकड़बग्घे ने मीकू को बैठे देखा तो पिंजरे के पास आकर मीकू को पकड़ने के लिए पिंजरे के अंदर छलांग लगा दी। लकड़बग्घे के पिंजरे में पहुँचते ही दरवाजा बंद हो गया और लकड़बग्घा पिंजरे में फंस गया। मीकू ने लकड़बग्घे को पिंजरे में कैद देखा तो खुश होकर बस्ती की ओर चल दिया।

जब मीकू ने बताया कि उसने लकड़बग्घे को पिंजरे में कैद कर दिया है तो सभी खरगोशों ने उसके साहस और बुद्धिमानी की प्रशंसा की।

जानकारी : डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

बाज
की निगाह बड़ी तेज

बाज को शिकारी पक्षी के रूप में पहचाना जाता है। यह तेज तर्रार और खतरनाक पक्षी कहलाता है। पुराने समय में राजा-महाराजा अपने यहाँ बाज पालते थे। 1200 ईसवीं पूर्व तक बाज पालने के प्रमाण मिले हैं।

बाज की अनेक जातियां तथा उपजातियां पाई जाती हैं। अबुल फजल ने अपने ग्रंथ में बाज की बहरी, छोटी बहरी, शिकय, खैलाह, झागर, बादशाह, बैसेराह, रिगी आदि जातियों का वर्णन किया है।

बाज की बहरी और शिकय जाति में मादा का आकार, नर से बड़ा होता है। ऐसा भी देखा जाता है कि मादा बाज नर से ज्यादा तेज तर्रार होती है। इसी कारण मादा बाज को कुछ लोग आज भी पालना पसंद करते हैं।

बाज एक ऐसा पक्षी है जिसकी नजर बहुत तेज होती है। यह उड़ते हुए भी धरती की ओर निगाह गढ़ाए रखता है। अवसर पाते ही अपने शिकार पर आक्रमण कर बैठता है।

छोटे जानवरों को अपने पंजों में जकड़कर एकांत स्थान या पहाड़ों पर ले जाकर भक्षण करता है।

बाज की एक विशेषता है जब इसे बहुत तेज प्यास लगती है तभी पानी पीता है। छोटे जीव-जंतु इससे बहुत भयभीत रहते हैं। यह मौका देख झपट्टा मारकर आक्रमण करता है।

दो बाल कविताएं : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

सच्ची सेवा

करें बड़ों की जो सच्ची सेवा,
पाते हैं वो ही आखिर मेवा।

नहीं कभी वो झूठ बोलते,
इधर-उधर को नहीं डोलते।

मीठी वाणी सदा बोलते,
सबके मन में प्रीत घोलते।

करे परिश्रम करे भलाई,
सच्चे मन से करें पढ़ाई।

चींटी अपना नाम

छोटे-छोटे हम प्राणी हैं,
करते बड़े-बड़े हैं काम।
मिलजुल-कर रहना सिखलाते,
भले है चींटी अपना नाम।।

मंजिल कितनी दूर भले हो,
किन्तु हम न घबराते।
बढ़ते-बढ़ते तरफ उसी की,
मंजिल अपनी हम पा जाते।।

सीख हमारे जीवन की है,
तुम कभी मत आशा छोड़ो।
मेहनत का फल होता मीठा,
मन से हार-निराशा छोड़ो।।

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : मोमबत्ती की लौ का बीच का हिस्सा पीला क्यों दिखाई देता है?

उत्तर : मोमबत्ती की बत्ती के पास लौ का सबसे निचला हिस्सा मोमबत्ती के धागे के बिना जले हुए कार्बन के कणों के कारण काला होता है। जब शेष कण लौ के साथ ऊपर उठते हैं तो ये चमकते हैं जिससे लौ का बीच का भाग पीला दिखाई देता है।

प्रश्न : हाइड्रोजन गैस से भरा गुब्बारा हवा में ऊपर की ओर क्यों जाता है?

उत्तर : हवा में मौजूद गैसों में से कुछ गैसें हवा से भारी होती हैं तथा कुछ हल्की। हाइड्रोजन एक ऐसी गैस है जो हवा से हल्की होती है। जब गुब्बारे में हाइड्रोजन गैस भर दी जाती है तो गुब्बारा हवा का जितना आयतन हटाता है, उस क्षेत्र में मौजूद हवा का भार गुब्बारे के भार से अधिक होता है जिससे गुब्बारा हवा में ऊपर की ओर जाता है।

प्रश्न : गोताखोर अपने साथ ऑक्सीजन की बजाय गैसों का मिश्रण क्यों ले जाते हैं?

उत्तर : यों तो सांस लेने के लिए ऑक्सीजन गैस सभी की प्राथमिक अनिवार्यता होती है। किन्तु समुद्र में जाने वाले गोताखोर अपने साथ ऑक्सीजन की बजाय गैसों का मिश्रण ले जाते हैं। इसका कारण यह है कि शुद्ध ऑक्सीजन गोताखोर के फेफड़ों पर कुप्रभाव डालती है जिससे बचने के लिए ऐसा किया जाता है।

प्रश्न : खाना पकाने के बर्तन नीचे से काले और ऊपर से चमकदार क्यों होते हैं?

उत्तर : काली वस्तु ऊष्मा को शीघ्रता से अवशोषित कर लेती है। अतः खाना पकाने के बर्तनों के पेंदे काले रखे जाते हैं ताकि बर्तन अधिक ऊष्मा को ग्रहण करके जल्दी से खाना पका दें। दूसरी बात, बर्तनों की ऊपरी सतह चमकदार इसलिए रखी जाती है ताकि बर्तनों में से ऊष्मा का स्थानान्तरण (बाहर न निकल सके) न हो सके।

लेख : परशुराम शुक्ल

लोमड़ी शार्क
(Fox Shark)

लोमड़ी शार्क एक शानदार समुद्री शार्क है। यह लोमड़ी की तरह बहुत चालाक होती है। अतः लोमड़ी शार्क (फॉक्स शार्क) कहते हैं। लोमड़ी शार्क की पूँछ का मीनपंख बड़ा लम्बा और शक्तिशाली होता है तथा इसी से यह अपने शिकार एवं शत्रु पर प्रहार करती है। इसीलिए इसे पूँछ से प्रहार करने वाली मछली भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे 'थ्रेशर' कहते हैं। लोमड़ी शार्क विश्व में थ्रेशर के नाम से ही प्रसिद्ध है।

लोमड़ी शार्क विश्व के अधिकांश उष्णकटिबंधीय, उपउष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण सागरों में पायी जाती है। यह गर्म सागरों की शार्क है किन्तु गर्मियों में उत्तर की ओर ठंडे सागरों में पहुँच जाती है। गर्मियों में इसे यूरोप में नार्वे तक देखा जा सकता है। इसके साथ ही उत्तरी अमेरिका में यह कैलीफोर्निया के सैंटा बारबरा द्वीप तक तथा प्रशान्त महासागर में जापान के सागर तटों तक पहुँच जाती है।

लोमड़ी शार्क की चार जातियां हैं। सामान्य लोमड़ी शार्क अथवा अटलांटिक लोमड़ी शार्क, प्रशान्त लोमड़ी शार्क, बड़ी आँख वाली अटलांटिक लोमड़ी शार्क और बड़ी आँख वाली प्रशान्त लोमड़ी शार्क। सामान्य लोमड़ी शार्क उष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण अटलांटिक महासागर के दोनों ओर तथा प्रशान्त महासागर के पूर्वी भाग में पायी जाती है। प्रशान्त लोमड़ी शार्क प्रशान्त महासागर के पश्चिमी भागों में मिलती है। बड़ी आँख वाली अटलांटिक लोमड़ी शार्क मडेरा, फ्लोरिडा और मैक्सिको की खाड़ी में बहुतायत से पायी जाती है तथा चौथी बड़ी आँख वाली प्रशान्त लोमड़ी शार्क केवल ताइवान के सागर तटों पर देखी जा सकती है। इन चारों लोमड़ी शार्क मछलियों में सामान्य लोमड़ी शार्क प्रमुख है। लोमड़ी शार्क की चारों जातियों में केवल मीनपंखों के आकार थूथुन के स्वरूप और आँखों के आकार का अन्तर होता

है। शेष सभी विशेषताएं, गुण और आदतें चारों लोमड़ी शार्क की एक समान होती हैं। वास्तव में लोमड़ी शार्क की तीसरी और चौथी जातियां ही अधिक गहराई में रहती हैं। इसीलिए इनकी आँखें बड़ी हो गयी हैं। अत: बहुत से जीव वैज्ञानिक इन चारों जातियों की लोमड़ी शार्क मछलियों को अलग-अलग न मानकर एक ही जाति की मानते हैं। इनका मत है कि लोमड़ी शार्क की एक ही जाति है तथा ये चारों जातियां इसकी उपजातियां अथवा प्रकार कही जा सकती हैं।

लोमड़ी शार्क प्राय: खुले सागरों में दिखाई नहीं देती। यह हमेशा अकेली विचरण करती है। कभी-कभी इसे जोड़े में अथवा छोटे-छोटे झुण्डों में देखा गया है। लोमड़ी शार्क बड़ी तेज तैराक हैं यह शक्तिशाली होने के साथ ही सागर में हमेशा सक्रिय रहती है। कभी-कभी तो यह इतनी तेजी से उछलती है कि पानी के बाहर आ जाती है। लोमड़ी शार्क बड़ी भयानक और खतरनाक होती है किन्तु यह मानव को कोई हानि नहीं पहुँचाती।

लोमड़ी शार्क की शारीरिक संरचना सागर में पायी जाने वाली सभी शार्क मछलियों से काफी भिन्न होती है। लोमड़ी शार्क दूर से देखने पर 'ग्रे शार्क' जैसी मालूम पड़ती है। लोमड़ी शार्क के शरीर की लम्बाई 5 मीटर से 6 मीटर तक होती है किन्तु कभी-कभी इससे भी अधिक लम्बी लोमड़ी शार्क देखने को मिल जाती है। लोमड़ी शार्क का वजन भी बहुत अधिक होता है तथा सागर में 450 किलोग्राम वजन तक की लोमड़ी शार्क बहुतायत से देखने को मिल जाती है। लोमड़ी शार्क की पीठ और ऊपर के भाग का रंग गहरे ग्रे से लेकर काला तक होता है तथा इसका पेट और शरीर के नीचे का भाग सफेद होता है। लोमड़ी शार्क के दाँत छोटे और त्रिभुजाकार होते हैं तथा दाँतों के किनारे चिकने होते हैं।

लोमड़ी शार्क के मीनपंख शार्क मछलियों के मीनपंखों से पूरी तरह भिन्न होते हैं। इसकी छाती के मीनपंख लम्बे और हँसिये के आकार के होते हैं तथा इनके नीचे के भाग का रंग ग्रे होता है। लोमड़ी शार्क की पूँछ का मीनपंख सर्वाधिक विलक्षण होता है। इसकी पूँछ के मीनपंख की लम्बाई इसके शरीर की लम्बाई के बराबर होती है। लोमड़ी शार्क की पूँछ का मीनपंख बड़ा शक्तिशाली होता है तथा यह दराती जैसा दिखाई देता है।

लोमड़ी शार्क का शिकार करने का ढंग बड़ा रोचक होता है। यह सर्वप्रथम मछलियों के एक झुण्ड की तलाश करती है और फिर झुण्ड के चारों ओर तैरना आरम्भ कर देती है। यह धीरे-धीरे अपना चक्कर छोटा करती जाती है। लोमड़ी शार्क बार-बार अपनी पूँछ पानी पर इस प्रकार मारती है कि झुण्ड की मछलियां एक-दूसरे के अधिक से अधिक निकट पहुँच जायें और झुण्ड कसावदार हो जाये। इसके बाद यह अचानक मछलियों के झुण्ड पर आक्रमण कर देती है।

इसका प्रमुख भोजन हेरिंग, पिलचार्ड तथा मैकेरल जैसी झुण्ड बनाने वाली मछलियां हैं। इनके साथ ही यह सुई मछली तथा ऐसी ही अन्य मछलियों का भी शिकार करती है। लोमड़ी शार्क हेरिंग जैसी झुण्ड में रहने वाली मछलियों के झुण्ड का पीछा करती है और इनके झुण्ड का पीछा करते हुए नदियों के मुहाने तक आ जाती है।

बाल कविता : रामगोपाल राही

फूल और तितली

कहा फूल ने तितली से तुम,
सचमुच सुन्दर लगती हो।
रंग-रंगीली पंख वाली,
अद्भुत अनुपम लगती हो।।

बच्चे तुमको देखा करते,
पल भर में उड़ जाती हो।
अचरज करते डाल डाल पर,
सुमनों पर इठलाती हो।।

काया सिमटी पंखों में ही,
रूप सुहाना लगता है।
उड़ आना-जाना पल-पल,
सचमुच अच्छा लगता है।।

बोली तितली फूलों से तुम,
सबके मन को भाते हो।
खिल खिल के मुस्कुराते रहते,
खुशबू खूब लुटाते हो।।

बाल कविता : रामसागर 'सदन'

फूलों का आया मौसम

फूलों का आया मौसम
वन-उपवन, खलिहान-खेत सब
महक रहे हैं हरदम।

दिशा-दिशा में खिली छटा
ठंड-ओस, औले-कुहरे का
ऊँचा-सब अभिमान लुटा।

धरती माँ इठलाती अब
पहन चुनरिया इन्द्रधनुष-सी
बिखराती मुस्कान गजब।

बाल कहानी :
मीरा सिंह 'मीरा'

चुहिया की ज़िद

रामपुर गाँव में बगीचे के पास एक प्राइमरी विद्यालय था। जहाँ गाँव के बच्चे रोज पढ़ने जाया करते थे। उसी विद्यालय के पिछवाड़े में रानी चुहिया का परिवार एक बिल के अन्दर सुख-शांति से जिन्दगी बसर कर रहा था। रानी अपने परिवार की सबसे छोटी सदस्य थी। हँसमुख, नटखट, मिलनसार व साहसी थी इसलिए सबकी प्यारी व लाडली थी।

बिल से बाहर निकलकर रानी अक्सर स्कूल के बच्चों को हँसते, खेलते, पढ़ते-लिखते देखा करती। बच्चों को पढ़ते देखकर उसका जी पढ़ने के लिए ललचाता। एक दिन कक्षा में शिक्षक महोदय जब शिक्षा के महत्व को समझा रहे थे तो वह भी कान लगाकर सुन रही थी। उसने मन ही मन निश्चय कर लिया कि वह भी पढ़ेगी-लिखेगी। पढ़-लिखकर चूहा जाति का उत्थान करेगी। फिर क्या था? अपने मन की बात अपने परिजनों के समक्ष रखी। उसकी ख्वाहिश सुनकर परिजन चिंता में डूब गए। सभी अपने-अपने तरीके से उसे समझाने-बुझाने का प्रयास करने लगे सबने एक स्वर से यही समझाने का प्रयास किया कि व्यर्थ के लफड़े में नहीं पड़े।

दरअसल परिवार वालों को डर था कि पढ़ने के लिए अपने बिल से बाहर निकलकर पास के विद्यालय में जाना होगा। उसी रास्ते में कालू बिल्ला का आतंक था। उसके डर से कोई भी चूहा उस रास्ते से नहीं गुजरता था। अपनी प्यारी रानी की जिन्दगी को खतरे में डालने की अनुमति कोई कैसे देता?

रानी चुहिया समझ चुकी थी कि उसे क्यों नहीं पढ़ने दिया जा रहा। वह उदास होने के बजाय उन्हें समझाने लगी– 'आप लोग व्यर्थ चिंता कर रहे हैं। पता है विद्यालय में गुरु जी क्या बता रहे थे?'

इस पर सभी ने एक स्वर से पूछा– 'क्या?'

गुरुजी बता रहे थे– 'एक समाज तभी विकास कर सकता है जब उसके नागरिक शिक्षित हों। शिक्षा से बुद्धि का विकास होता है, सोच-समझ बढ़ती है। हमें डर कर नहीं बल्कि निडर होकर जीना चाहिए। गुरुजी यह भी बता रहे थे कि जो चुप रहकर अन्याय सहता है, वह भी अपराधी होता है। आप लोग क्यों अपराधी बनना चाहते हैं।?'

'क्या बात कर रही हो रानी? हम कालू बिल्ला से डरते हैं तो क्या हम भी अपराधी हैं?' बूढ़ी चुहिया दादी ने आश्चर्य से पूछा।

'और नहीं तो क्या? दादी, कोई किसी को बिना किसी कारण के तंग नहीं कर सकता। कालू बिल्ला भी नहीं। अगर वह बिना किसी कारण से हमें तंग करेगा तो उसे जेल की हवा भी खानी पड़ सकती है। उसे देखकर हम डरते हैं इसलिए वह डराता है।' रानी की बात सुनकर सभी परिजन आपस में सलाह करने लगे। आम सहमति से सबने उसे पढ़ने की इजाजत दे दी। फिर क्या था? वह खुशी-खुशी विद्यालय जाने लगी।

एक बार कालू बिल्ला ने रानी चुहिया को परेशान किया तो दरोगा लोमड़मल ने कालू बिल्ला को सलाखों के पीछे डाल दिया। रानी की देखा-देखी अन्य वनप्राणी भी विद्यालय में जाने लगे और भयमुक्त वातावरण खुशहाल हो गया।

प्रेरक-प्रसंग : गौरी शंकर कुमार

भय

महान दार्शनिक कन्फ्यूशियस भ्रमणप्रिय थे। एक बार वे घूमते-घूमते किसी अन्य देश में जा पहुँचे। वहाँ के शासक ने उनका यथेष्ट स्वागत-सम्मान किया।

सन्त कन्फ्यूशियस अभी दरबार में ही उपस्थित थे कि एक दरबारी तीन पिंजरे लेकर वहाँ आ पहुँचा। एक पिंजरे में एक चूहा बन्द था, दूसरे में बिल्ली और तीसरे में एक बाज।

बन्द पिंजरे में उन तीनों जन्तुओं को अत्यन्त प्रिय लगने वाले खाद्य पदार्थ भी रखे थे। परन्तु आश्चर्य यह था कि उनमें से कोई भी खाद्य पदार्थ को नहीं खा रहा था।

दरबारी ने राजा से इसका कारण पूछा तो वह न बता सका। राजा ने सन्त कन्फ्यूशियस से उसका कारण बताने का आग्रह किया तो वे बोले, ''राजन्! इसका कारण है भय। चूहा तो बिल्ली और बाज से भयभीत है। बिल्ली बाज के रूप में अपनी मृत्यु को देखकर पीड़ित है और बाज को इस आशंका के रूप में भय है कि यदि वह अपने पिंजरे में रखे भोजन की ओर ध्यान देगा तो चूहा और बिल्ली अवश्य ही भाग जायेंगे।

राजन् भय की यही विशेषता है। यह अपनी कल्पना के द्वारा अपने मन में स्वयं ही बढ़ता जाता है। ये सब तो अज्ञानी जीव-जन्तु हैं, किन्तु स्वयं को महान ज्ञानी मानने वाला इन्सान भी भय से मुक्त नहीं रह पाता।

आलेख : विभा वर्मा

टमाटर है गुणकारी

बच्चों! आपने एक कहावत तो अवश्य सुनी होगी कि 'एक सेब रोज खाइए और निरोग रहिये।' ठीक ऐसी ही कहावत अब टमाटर के लिए भी कही जा रही है। यानि 'रोज खाओ टमाटर, रहो स्वस्थ जीवन भर।'

टमाटर का वनस्पतिक नाम लाइकोन है तथा यह सोलनेसी कुल का सदस्य है। आयुर्वेद के अनुसार टमाटर हल्का, स्निग्ध, गर्म, स्फूर्तिदायक, क्षुधावर्धक एवं कब्ज, कफ और वात-विकारों को दूर करता है। टमाटर में कैल्शियम, फास्फोरस, सल्फर, पोटेशियम, मैग्नीशियम, क्लोरीन सोडियम लौह तथा आयोडिन आदि खनिज भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। इसमें शरीर के लिए उपयोगी साइट्रिक एसिड एवं फास्फोरिक एसिड भी होता है। जो रक्त को शुद्ध करता है।

टमाटर में लाइकोपीन एक प्रकार का कैरोटीनॉयड है जो इसको लाल रंग प्रदान करता है। यह लाइकोपीन हमारे शरीर की कोशिकाओं को तम्बाकू और डीजल के धुएं से उत्पन्न नाइट्रोजन ऑक्साइड के बुरे प्रभावों से बचाता है। यह नाइट्रोजन ऑक्साइड शरीर में प्रवेश करके कोशिकाओं को कैंसर ग्रस्त बना सकती है। इसी से बचने के लिए विटामिन से भरपूर टमाटर का खूब सेवन करना चाहिए। इसका रस पेट एवं आँतों को भी स्वच्छ करता है। यह मूत्र रोगों में भी उपयोगी है। इसमें पाया जाने वाला लौह तत्व सुपाच्य होता है। यही कारण है कि यह पूरा का पूरा शरीर में आत्मसात हो जाता है। इसका रस तो तुम्हारे लिए नारंगी के रस से श्रेष्ठ माना गया है। इसके रस को ज्यादा स्वादिष्ट बनाने के लिए उसमें शहद, खजूर अथवा थोड़ी चीनी भी मिलाई जा सकती है। टमाटरों को उबालकर इसमें क्रीम डालकर सूप भी बनाया जाता है। इसके रस का उपयोग पेय के रूप में भी किया जाता है।

सरल व सकारात्मक लेखन का प्रयास करें

– श्रीमती राज कुमारी जी

दिल्ली, 25 दिसम्बर। 'लिखते समय सरल व सकारात्मक शब्दों का चयन का विशेष ध्यान रखना चाहिये। पत्र-पत्रिकाओं को घर-घर तक पहुँचाने का सार्थक प्रयास करना है ताकि सत्गुरु का संदेश जन-जन तक पहुँचे और हर घर स्वर्ग बने। हालाँकि आजकल सोशल मीडिया का दौर है परन्तु आज भी प्रिंट मीडिया अपनी सशक्त व महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।' उपरोक्त भाव पत्रिका-प्रकाशन, प्रेस-पब्लिसिटी व प्रचार विभाग की प्रभारी श्रीमती राज कुमारी 'राज मामी' जी ने एक नज़र के स्वर्ण-जयंती वर्ष के समापन अवसर पर सन्त निरंकारी मण्डल के मुख्यालय में आयोजित पत्र-पत्रिकाओं के उत्तरी भारत के लेखकों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए।

सम्मेलन में श्री राकेश मुटरेजा जी (निजी सचिव, सत्गुरु माता जी), श्री विवेक मौजी जी (कोऑर्डिनेटर, प्रचार विभाग), श्रीमती प्रिमल सिंह जी (कोऑर्डिनेटर, प्रेस-पब्लिसिटी), श्री सुलेख 'साथी' जी (प्रबन्ध सम्पादक, पत्रिका विभाग), डॉ. विजय शर्मा जी (सम्पादक, एक नज़र, हिन्दी), श्री हरजीत निषाद जी (सम्पादक, सन्त निरंकारी, हिन्दी) एवं श्री विमलेश आहूजा जी (सम्पादक, हँसती दुनिया, हिन्दी-अंग्रेजी) ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए।

इस अवसर पर एक नज़र स्वर्ण-जयन्ती लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित किया गया। श्रीमती राज कुमारी जी ने स्मृति-चिन्ह और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए। विजेताओं में हिन्दी भाषा के श्री ओम मल्होत्रा (बीकानेर), डॉ. प्रद्युम्न भल्ला (कैथल), श्री अमृत हरमन (लठियानी, हि.प्र.) तथा पंजाबी भाषा के श्री प्रमोद धीर (जैतो मण्डी, पंजाब), श्री अमर सिंह कैले (जालंधर) एवं श्री दर्शन सिंह कण्डा (तलवंडीभाई) थे। निरंकारी-स्टूडियो द्वारा एक नज़र की 50 वर्ष की विकास-यात्रा पर तैयार वृत-चित्र भी दिखाया गया।

श्री विमलेश आहूजा जी ने सम्मेलन में कहा कि संसार को संस्कार हँसते-हँसते दिये जा सकते हैं। आपने लेखकों से कहा कि हम सभी का दिल बच्चा है, इसलिए हमें हँसती दुनिया के लिए एक बच्चे की नज़र से दुनिया को देखते हुए उसके ही स्तर से मिशन का सन्देश प्रदान करना है।

गुरु वन्दना

आध्यात्मिक स्थल (समालखा) में हुए 74वें निरंकारी सन्त समागम (वर्चुअल) के अवसर पर सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज की उपस्थिति में गुरुवन्दना प्रस्तुत करते हुए निरंकारी भक्त।

प्रस्तुति : शिव मोहन यादव

पहेलियां

1. जादू की डिबिया ली हाथ,
करें लाख की एक में बात।
कभी मैं बोलूं कभी वो बोले,
वो बुद्धू जो भेद न खोले।।

2. चार अक्षर का मेरा नाम,
बिना पैर के चलना काम।
दूजा कटे अगर हो जाऊँ,
बोलो जी मैं क्या कहलाऊँ?

3. रूकना मेरा काम नहीं,
चलते रहना ही मेरी शान।
जो मेरे संग चलता,
वो बन जाता महान।।

4. गिरगिट की वह बहन कहाती,
छत-दीवार पे पाई जाती।
कीट-पतंगे खाना काम,
बोलो बच्चों उसका नाम?

5. रातों की वह नींद उड़ाते,
कानों में वह गीत सुनाते।
खून खींचना जिसका काम,
बोलो बच्चों क्या है नाम?

6. तीन अक्षर का मेरा नाम,
जल में रहती सुबहो-शाम।
प्रथम कटे तो छली कहाऊँ,
कौन नाम से जानी जाऊँ?

7. सात गांठ की रस्सी,
गाठ गाठ में रस।
उसका उत्तर जो बतायें,
भैया देंगे रुपया दस।।

8. देख सूरज की जो रोशनी,
अपनी गर्दन को है मोड़े।
उस फूल का नाम बतलाना,
पाप लगे जो उसको तोड़े।।

9. लाल मुँह काला शरीर,
कागज को वह खाता।
रोज शाम को पेट फाड़कर,
कोई उसे ले जाता।।

10. मटके के अन्दर मटका,
मटके को घर लाकर पटका।
कुछ को खाया, कुछ को फेंका,
मटके का पानी भी गटका।।

(पहेलियों के उत्तर
किसी अन्य पृष्ठ पर देखें।)

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
-विकास कुमार

क्या हुआ किट्टी? तुम अभी तक सोई नहीं!
मम्मी, कल मोली का जन्मदिन है और मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या गिफ्ट दूँ?
बस इतनी-सी बात! कल हम बाज़ार जाकर देख लेंगे कि क्या लेना है। चलो अब तुम सो जाओ।
किट्टी, चलो बाज़ार चलना है।
हाँ मम्मी, चलो।

किट्टी देखो, यहाँ बहुत खिलौने हैं। इनमें से जो भी पसंद हो बता दो।
मम्मी, मुझे ये गुड़िया पसंद है।
ठीक है किट्टी! हम यही लेते हैं।
भाई साहब, इसे पैक कर दो।
ठीक है, बहन जी!

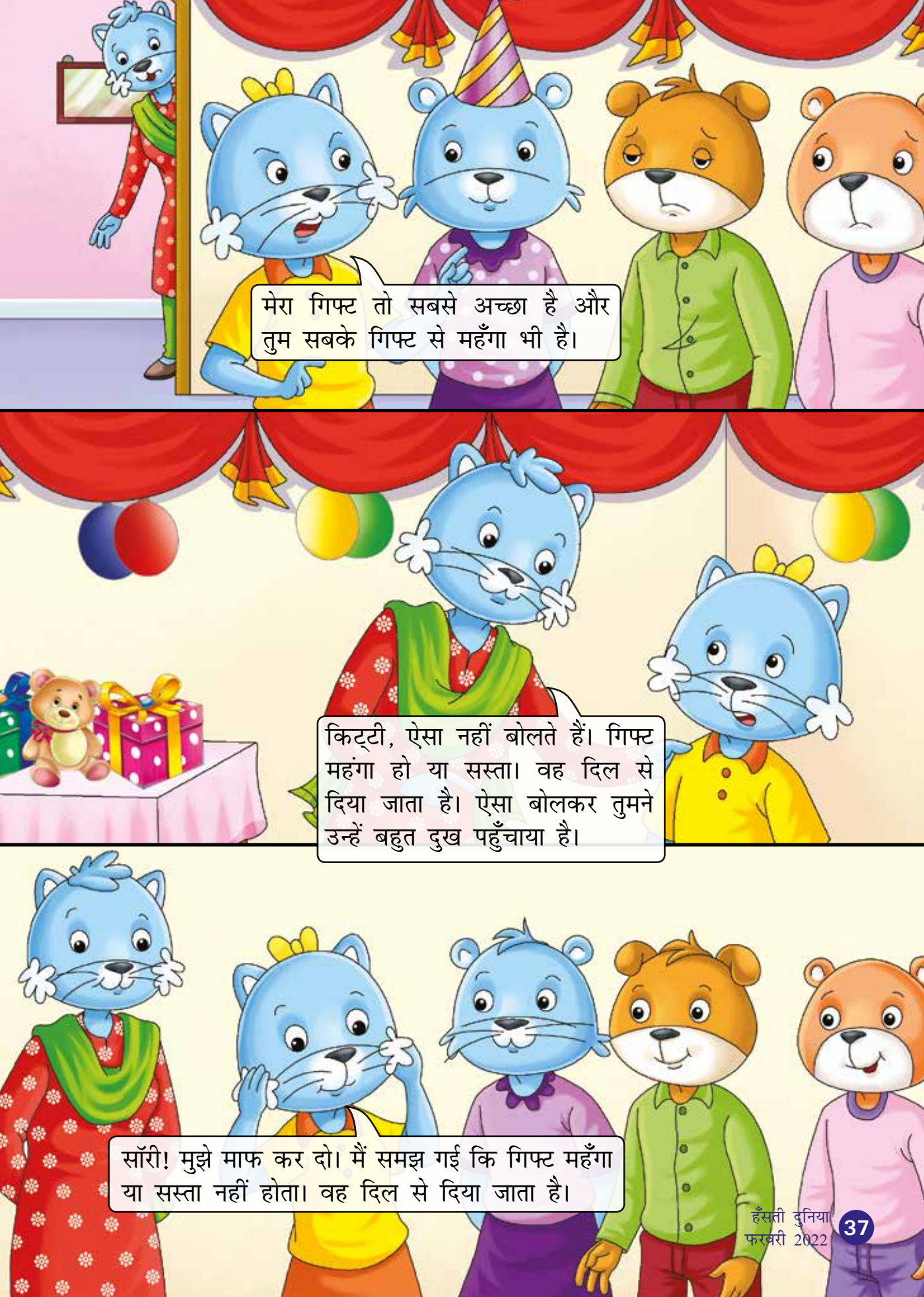
मेरा गिफ्ट तो सबसे अच्छा है और तुम सबके गिफ्ट से महँगा भी है।
किट्टी, ऐसा नहीं बोलते हैं। गिफ्ट महंगा हो या सस्ता। वह दिल से दिया जाता है। ऐसा बोलकर तुमने उन्हें बहुत दुख पहुँचाया है।
सॉरी! मुझे माफ कर दो। मैं समझ गई कि गिफ्ट महँगा या सस्ता नहीं होता। वह दिल से दिया जाता है।

संकलन : प्रदीप कुमार

कभी न भूलो

❖ अपने अहंकार पर विजय पाना ही प्रभु की सेवा है।
– महात्मा गाँधी

❖ प्रेम करने वाला पड़ोसी दूर रहने वाले से कहीं उत्तम है। – चाणक्य

❖ हे परमेश्वर! हमारे मन को शुभ संकल्प वाला बनाओ। हमें सुखदायी बल और कर्म शक्ति प्रदान करो। – ऋग्वेद

❖ विपत्ति में जिसकी बुद्धि कार्यरत रहती है, वही धीर है। – सोमदेव

❖ निरन्तर अथक परिश्रम करने वाले भाग्य को भी परास्त कर देंगे। – तिरुवल्लुर

❖ हमारे व्यक्तित्व की उत्पत्ति हमारे विचारों में है इसलिए ध्यान रखें कि आप क्या विचारते हैं, शब्द गौण है। विचार मुख्य है और उनका असर दूर तक होता है।
– स्वामी विवेकानंद

❖ महान संकल्प ही महान फल का जनक होता है। – हजारीप्रसाद द्विवेदी

❖ दिमाग सब कुछ है जो आप सोचते हो वो बन जाते हैं। – गौतम बुद्ध

❖ आप अपने भविष्य को नहीं बदल सकते लेकिन आप अपनी आदतों को बदल सकते हैं और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देंगी।
– डॉ. अब्दुल कलाम

❖ मानव का दानव होना उसकी हार है, मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है और मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है।
– डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

❖ असफल होने पर आपको निराशा का सामना करना पड़ सकता है परन्तु प्रयास छोड़ देने पर आपकी असफलता सुनिश्चित है।
– बेवेरली सिल्स

❖ किसी इंसान में जब ज्ञान का उदय होता है तो बाहरी जगत को पता नहीं चलता है किंतु जगत के प्रति उसका दृष्टिकोण बदल जाता है। – रामकृष्ण परमहंस

❖ कष्ट ही तो वह प्रेरक शक्ति है जो मनुष्य को कसौटी पर परखती है और आगे बढ़ाती है। – वीर सावरकर

❖ जो व्यक्ति विकास के लिए खड़ा है उसे हर एक रुढ़िवादी चीज की आलोचना करनी होगी उससे अविश्वास करना होगा तथा उसे चुनौती देनी होगी। – भगत सिंह

❖ एक छोटी-सी चींटी आपके पैर को काट सकती है पर आप उसके पैर को नहीं काट सकते इसलिए जीवन में किसी को छोटा नहीं समझे वह जो कर सकता है, शायद आप न कर पायें। – अज्ञात

कविता : गफूर 'स्नेही'

बसंत की है ऋतु

सर्दी की हुई विदाई,
बसंत की है ऋतु आई।
हवा सौरभ लेकर आई,
फूलों ने जिसे लुटाई।।

बागों में बहार है,
बहती मंद बयार है।
तितली की भरमार है,
कोयल की पुकार है।।

देखो तो उस ओर,
कैसे सुन्दर नाचे मोर।
कोई कैसे होगा बोर,
चिड़ियों का है जब शोर।।

खेतों में गेहूँ चना,
सरसों का रंग हल्दी सना।
मधुमक्खी का काम बना,
शहद खूब है अब बनना।।

कवि सुनाते हैं कविता,
पर्वत वन झरना सरिता।
झरना कल-कल कर बहता,
अदृश्य चितेरा सब रचता।।

बाल कहानी : अजय डिमरी

अनमोल है सब कुछ

आज दादा जी आंगन में बैठे काफी परेशान लग रहे थे। दादा जी बैठे ही थे कि तभी रुद्रांशी व वैष्णवी स्कूल से आने के बाद रोज की तरह दादा जी के पास गये लेकिन दादा जी काफी उदास लग रहे थे तभी रुद्रांशी व वैष्णवी ने दादा जी से पूछा– दादा जी, आप कुछ दिनों से काफी चिन्तित व परेशान लग रहे हो।

–अरे, तुम दोनों स्कूल से आ गये हो। –दादा जी ने कहा।

–हाँ दादा जी, लेकिन आपने हमारे सवाल का जवाब नहीं दिया।

–नहीं बेटा, ऐसा कुछ नहीं है। –दादा जी ने कहा।

–दादा जी फिर भी कुछ कहो न। –रुद्रांशी ने कहा।

–अच्छा एक काम करो पहले खाना खाओ। फिर स्कूल का काम निपटाकर थोड़ा आराम करो। शाम को विस्तार से बातें करेंगे।– दादा जी ने कहा।

फिर सभी लोगों ने भोजन किया और आराम करने चले गये।

अब दादा जी ने हाथ-मुँह धोकर दोनों को एक बगीचे के पास ले गये और कहा– देखो बगीचे को?

रुद्रांशी और वैष्णवी दोनों ने जवाब दिया– यह तो खाली है इसमें देखना क्या है?

दादा जी ने कहा– इसीलिए तो यहाँ लाया हूँ।

रुद्रांशी ने तपाक से जवाब दिया इसमें परेशान होने की क्या आवश्यकता है? दादा जी इसे हमने रोज ऐसा ही देखा है।

फिर दादा जी ने कहा– बेटा, आज से चालीस वर्ष पहले ये बगीचा हरा-भरा व फूलों से भरा रहता था। भौंरों से गुंजायमान रहता था। तितलियां यहाँ अठखेलियां करती थीं। कलियां यहाँ हमेशा खिली रहती थीं।

चिड़िया यहाँ चहचहाती रहती थी। गिलहरी यहाँ आया-जाया करती थी।

–तो फिर दादा जी ये बस अब क्यों नहीं, ऐसा क्यों?

दादा जी ने बताया– बेटा, हम मनुष्यों ने अपने स्वार्थ के लिए अपने ऐशोआराम के लिए प्रकृति से छेड़छाड़ की और अपना जीवन ही संकट में डाल दिया और आज वो ही इस जंजाल में फंस गया।

आज मनुष्य ही प्रकृति की खुशियों के लिए तरस गया। कुछ समय के बाद वो किताबों मे ही पढ़ पायेगा कि भंवरा फूलों पर मंडराता था। कलियां खिलती थीं, फूल खिलते थे, चिड़िया चहचहाती थी, तितलियां होती थीं, बाघ होते थे, भालू होता था, बंदर आदि जानवर भी होते थे।

मनुष्य की करतूतों से प्रकृति भी परेशान हो गयी है लेकिन मनुष्य को यह पता नहीं या वो अन्जान बना है कि परेशानी प्रकृति की नहीं बल्कि स्वयं मनुष्य की ही है। प्रकृति में जो भी दैवीय आपदाएं बादल फटना, बाढ़ आना, भू-स्खलन, भूक्षरण आदि जो भी हो रहा है। ये सब मनुष्य की करतूतों का ही परिणाम है। आज मनुष्य अपनी करतूतों की सजा भुगत रहा है लेकिन उसमें सुधार करने को तैयार नहीं है। दादा जी ने कहा।

–तो फिर प्रकृति की आपदाओं से बचने के उपाय क्या हैं? –वैष्णवी ने पूछा।

दादा जी ने कहा– बेटा, यदि प्रकृति की आपदाओं से बचना है तो सबसे पहले पेड़ लगाने होंगे।

–पेड़ों का प्रकृति से क्या सम्बन्ध?

–वैष्णवी ने फिर पूछा।

–बेटा, पेड़ ही प्रकृति को बचाने में सबसे ज्यादा सहायक हैं क्योंकि पेड़ों से ही प्रकृति शुद्ध होती है। पेड़ प्रकृति में उपस्थित कार्बन डाईऑक्साइड को ग्रहण कर अपना भोजन बनाते हैं और जीव-जन्तुओं को स्वस्थ रहने के लिए ऑक्सीजन देते हैं। कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा प्रकृति में बढ़ने से पृथ्वी पर अनेक रोग व बीमारियां हो जाती हैं। प्रकृति अनमोल है। प्रकृति की हर वस्तु अनमोल है।

रुद्रांशी व वैष्णवी दोनों ने दादा जी को विश्वास दिलाया कि हम भी पेड़ लगायेंगे व अपने आस-पास के लोगों को, विद्यालय के छात्रों को प्रकृति के प्रति सचेत करेंगे।

दादा जी ने कहा– बेटा, यदि ऐसा हुआ तो प्रकृति फिर से आबाद हो जायेगी और मनुष्य खुशियों से भर उठेगा, मनुष्य फिर किताबों में नहीं बल्कि प्रकृति में वो सब देख पायेगा जो उसे स्वयं ही आनन्दित करेगी।

आलेख : कमल सौगानी

गजब दुनिया गोरिल्ला की

गोरिल्ला की तीन प्रजातियां हैं– ईस्टर्न लोलैंड, वेस्टर्न लोलैंड और माऊंटेन गोरिल्ला। मध्य अफ्रीका और एशियाई देशों का यह मूल निवासी है। इसकी अधिकतम लम्बाई 7 फीट और वजन 350 किलो तक भी हो सकता

है। मादा की ऊँचाई औसतन 5 फीट होती है और इसका वजन 90 से 100 किलो तक होता है। इसका स्वभाव बड़ा क्रोधी होता है।

यूं गोरिल्ला सामाजिक प्राणी है और यह अपने समूह में ही रहना पसन्द करता है। यह अपनी शक्ल से डरावना लेकिन शान्त प्रवृत्ति का जानवर है। इसमें मानव से काफी समानताएं मौजूद हैं। हाँ, मनुष्यों की तरह गोरिल्ले भी सीधे चल सकते हैं। लेकिन उनकी रीढ़ मनुष्य की रीढ़ के समान झुकती नहीं, वह एकदम सीधी होती है। मनुष्यों की तरह इनके 32 दांत होते हैं। बगल के दांत चौड़े और पैने होते हैं। हाथों में पांच अंगुलियां और हाथ की पकड़ भी मानव के समान होती है।

गोरिल्ला के पांव भी हाथों की तरह ही होते हैं। ये पैरों से भी पेड़ों की टहनियों को पकड़ सकते हैं। मादा गोरिल्ला और बच्चे पेड़ों पर चढ़ने के मामले में अधिकतम चुस्त और फुर्तीले होते हैं। जंगल में दुश्मनों को डराने के लिए ये खड़े होकर पेड़ों की टहनियों को हवा में उड़ाते हैं। शिकारियों के लिए भी वे ऐसा ही करते हैं।

गोरिल्ला में एक खासियत है कि यह सीधी लड़ाई नहीं करता लेकिन अपनी छाती को जोर से पीटते हुए, दांतों को भींचते हुए गुस्सा और रोष प्रकट करता है।

इनका मुख्य भोजन पेड़ों की ताजा पत्तियां, जंगली फल और कन्दमूल है। यह विकसित स्तनपायी जन्तु है। इनकी बुद्धि मनुष्य के बराबर मानी जाती है।

समूह का मुखिया नर गोरिल्ला होता है और सबके लिए भोजन की खोज और प्रबंध उसका काम होता है। सोने के लिए जगह तलाशना भी उसी को तय करना होता है।

गोरिल्ला की औसतन उम्र 40 वर्ष है। 30 वर्ष के उपरान्त यह बूढ़ा होने लगता है तथा दाढ़ी में भी सफेद बाल आने लगते हैं व दांत कमजोर होकर धीरे-धीरे गिरने लगते हैं।

उड़ने वाली गिलहरी

जानकारीपूर्ण लेख:
कमल जैन

बच्चो! नीलगगन में उड़ते हुए परिन्दों को तो आपने देखा ही होगा लेकिन क्या कभी किसी गिलहरी को भी उड़ते देखा है? शायद नहीं देखा होगा। आपको जानकर अचरज होगा उत्तरी अमेरिका के घने जंगलों में पक्षियों की तरह उड़ने वाली कई गिलहरियां दिखाई देती हैं।

यह गिलहरी 18-20 इंच लम्बी होती है। इसका वर्ण भूरा, काला व नीला होता है। इसके शरीर से एक प्रकार की चमक निकलती रहती है। उड़ने से पहले यह अपने शरीर की चमड़ी को चमगादड़ की तरह फैलाकर चौड़ा कर लेती है। इन गिलहरियों का शरीर इतना फूल जाता है कि जैसे किसी खुली छतरी में हवा भर दी हो। यही इनके पंखों का काम करती है।

यह छोटे-छोटे कीट-पतंगे आदि खाती है। फूल व वृक्षों की कोमल पत्तियों को भी ये बड़े चाव से खाती है। तीन-चार गिलहरियां मिलकर पेड़ पर लगे मधुमक्खी के छत्ते को छेड़ देती हैं। जब मधुमक्खियां इधर-उधर उड़ने लगती हैं तब ये आराम से मधु पीती रहती हैं।

ये गिलहरियां अपने नन्हें बच्चों को पीठ पर तरकीब से चिपकाकर भी उड़ान भरती हैं, ताकि इनके नन्हें बच्चे भी उड़ने की कला में निपुण हो सकें।

कटिबन्ध क्षेत्रों में तो उड़ने वाली जहरीली गिलहरियां पाई जाती हैं। ये छोटे-मोटे पंछी, मेढक व छोटे सांप को भी अपना शिकार बना लेती हैं। ये कई बार फलों को कुतर-कुतरकर जहरीला भी कर देती हैं। यदि कोई मनुष्य इनके कुतरे फलों को भूल से खा लेता है तो उसकी मृत्यु भी हो सकती है।

दक्षिण अफ्रीका के जंगलों में केसरिया रंग की ऐसी गिलहरियां पाई जाती हैं जो रात्रि में उड़ान भरती हैं तथा इनकी आँखें उल्लू की तरह चमकती रहती हैं। ये गिलहरियां पशु-पक्षियों का खून पीती हैं। ये ऊँचे वृक्षों पर घोसले बनाकर रहती हैं।

पढ़ो और हँसो

पत्नी : आप कहाँ जा रहे हो?
पति : शेर का शिकार करने जा रहा हूँ।
पत्नी : (थोड़ी देर बाद) तो जाओ न, खड़े क्यों हो?
पति : कैसे जाऊँ, बाहर कुत्ता खड़ा है।

एक महिला अपनी भूलने की आदत से बहुत परेशान थी। वह अपनी सहेली से बोली– मुझे भूलने की बहुत बुरी आदत है। अगर मैं बाजार से चार चीजें लेने जाती हूँ तो दो ही लेकर आती हूँ।

इस पर उसकी सहेली बोली– मेरा तो इससे भी बुरा हाल है। अगर मैं सीढ़ियां चढ़ रही होती हूँ तो रूककर सोचना पड़ता है कि मैं चढ़ रही थी या उतर रही थी।

दीपक बार-बार रसोई में जाता और चीनी का डिब्बा खोलकर देखता फिर बंद करके रख देता। बार-बार की इस खटर-पटर से पत्नी परेशान हो गई। आखिर उसने पूछ लिया।

दीपक बोला– कल मैं डॉक्टर के पास गया था न, उसने कहा कि हर घंटे शुगर चेक करना और कम या ज्यादा होने पर मुझसे सम्पर्क करना।

– किरन गुप्ता (लाजपत नगर)

राजेश : (राजन से) अरे यार! तुमने मेरी प्लेट से आम क्यों उठा लिया?
राजन : तुम्हीं ने तो मुझे कहा था कि गधे आम नहीं खाते।
माँ : (राजू से) राजू, बाजार से गर्म मसाला ले आओ।
राजू : (वापस आकर) माँ मैंने सभी दुकानों पर मसालों को छूकर देखा कोई भी मसाला गर्म नहीं था।

दादी : टिन्नी, अगर तुमने मुझे तंग किया तो मैं तुम्हें कच्चा चबा जाऊँगी।
टिन्नी : (हँसते हुए) दादी जी, आप कच्चा कैसे चबाएंगी, आपके तो दांत ही नहीं है।

अंकल : राजेश, सुना है तुम्हारे घर में नया 'बेबी' आया है।
राजेश : जी नया क्या कहते हैं आप। जब रोता है तो लगता है कि वर्षो से रोना सीखता आया है।

सेठ : (नौकर से) जरा देखना, कितने बजे हैं?
नौकर : साहब, मुझे समय देखना नहीं आता।
सेठ : घड़ी देखकर बताओ कि बड़ी सुई कहाँ पर है और छोटी सुई कहाँ पर?
नौकर : जी दोनों सुईयां घड़ी के अन्दर ही हैं।

– सौरभ कुमार गुप्ता (हरदोई)

रामलाल का रेडियो खराब हो गया। उसने रेडियो खोलकर देखा तो उसमें एक मच्छर मरा हुआ था।

रामलाल बोला– ये रेडियो बजेगा कैसे? गायक तो मर गया।

मरीज : डॉक्टर साहब! मेरा सरदर्द करता है।
डॉक्टर : यह तो कमजोरी के लक्षण हैं। आप छिलके सहित फल खाया करो।

(थोड़ी देर बाद)

मरीज : डॉक्टर साहब! पेट में दर्द हो रहा है।
डॉक्टर : क्या खाया था?
मरीज : जी, छिलके सहित अन्नानास।

राहुल : यार! आज तक इसका पता क्यों नहीं चल पाया है कि अक्ल बड़ी या भैंस?
रोहित : दोनों की जन्मतिथि मालूम नहीं है न इसलिए।

शिक्षक : बताओ सोनू सप्ताह में कितने दिन होते हैं?
सोनू : जी सर, सात।
शिक्षक : बोलकर बताओ।
सोनू : एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात।

माँ : (बेटे से) कल तुम्हारा पेपर है, तुमने पूरी तैयारी कर ली है न?
बेटा : हाँ मम्मी, पेन ले लिया है, पैंट-कमीज भी प्रेस कर ली है और जूते भी पॉलिश कर लिये हैं।

गप्पू और पप्पू आपस में अपनी-अपनी समस्याओं पर चर्चा कर रहे थे।

गप्पू : यदि मैं कॉफी पीता हूँ तो मैं सो नहीं सकता।
पप्पू : मेरे साथ तो इसका ठीक उलटा होता है। यदि मैं सो जाता हूँ तो कॉफी नहीं पी सकता।

– रवित वधवा (श्रीगंगानगर)

शिक्षक : (किसान से) आपका बेटा क्लास में सबसे कमजोर है।
किसान : भगवान की दया से घर में दो-दो भैंस हैं। दूध-घी की कमी नहीं। फिर भी पता नहीं ये इतना कमजोर क्यों है?

पुत्र : (पिता से) पिताजी, मुझे ढोल खरीद दीजिए न।
पिता : नहीं बेटे, तू ढोल बजाकर मुझे तंग किया करेगा।
पुत्र : नहीं पिताजी, मैं तो तब बजाऊँगा जब आप सो जाया करेंगे।

बेटा : पिताजी, कोई आया है।
पिता : कौन है?
बेटा : कोई मूंछ वाला है।
पिता : कह दे नहीं चाहिए।

मोना : (लाली से) तुमने जो मधुमक्खियां पाली हैं, उनसे कोई लाभ हुआ?
लाली : हाँ, मेरे यहाँ मेहमानों का आना कम हो गया है। – श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

संग्रहकर्ता : भारतभूषण शुक्ल

क्या आप जानते हैं ?

❖ भारत का सबसे बड़ा आवासीय भवन राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में है। राष्ट्रपति भवन का पुराना नाम 'वायसराय हाउस' था।

❖ भारत की सबसे लम्बी नहर इंदिरा गाँधी नहर या राजस्थान नहर (650 कि.मी.) लम्बी है।

❖ भारत का सबसे बड़ा गुफा मंदिर एलोरा (महाराष्ट्र) में है।

❖ भारत का सबसे पुराना गिरिजाघर केरल के थ्रिशुर जिले के पालायूर नामक स्थान पर है। इसका नाम सेंट थॉमस चर्च है।

❖ भारत का सबसे बड़ा गिरिजाघर गोवा में है जिसका नाम सेंट कैथेड्रल है।

❖ भारत का पहला कॉलेज फोर्ट विलियम कोलकाता में है।

❖ भारत का पहला मेडिकल कॉलेज बंगाल: (अब कोलकाता मेडिकल कॉलेज) इसकी स्थापना 28 जनवरी 1835 को लॉर्ड विलियम बेंटिंक ने की थी।

❖ भारत का पहला इंजीनियरिंग कॉलेज : थॉमसन कॉलेज रूड़की में है।

❖ भारत ने अपना प्रथम साउंडिग रॉकेट 'नाइक-अपाचे' 21 नवम्बर 1963 को छोड़ा था। यह सबसे पहली सफल उड़ान थी।

❖ 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा' के रचयिता मोहम्मद इकबाल है।

❖ कोलम्बिया देश का नाम क्रिस्टोफर कोलम्बस के नाम पर रखा गया है।

❖ दिल्ली स्थित जन्तर-मन्तर का निर्माण जयपुर के महाराजा जयसिंह द्वितीय ने करवाया था।

❖ चाँद पर पहला कदम रखने वाला मानव नील आर्मस्ट्रांग था।

❖ कास्टिक सोडा का कैमिकल नाम सोडियम हाइड्रॉक्साइड है।

❖ इन्द्रावती राष्ट्रीय उद्यान छत्तीसगढ़ में है।

❖ जिराफ दुनिया का सबसे लम्बा जानवर है। इसकी जीभ भी बहुत लम्बी होती है। जिराफ की जीभ की लम्बाई 21 इंच तक होती है। जिराफ अपनी लम्बी जीभ से अपने कान भी साफ करता है। संसार में जिराफ ही एक ऐसा प्राणी है जिसके जन्म से ही सींग होते हैं। नर-मादा दोनों के ही माथे पर हड्डी जैसे दो मूठ होते हैं जो इसके सींग कहलाते हैं। जिराफ बोल नहीं पाता क्योंकि वह जन्मजात गूंगा होता है।

❖ गन्ने को बोने के लिए बीज का प्रयोग नहीं होता।

❖ सीरिया की राजधानी दमिश्क विश्व की सर्वाधिक पुरानी राजधानी मानी जाती है।

❖ नील नदी का पानी गर्म होता है।

बाल कविता : कीर्ति श्रीवास्तव

बगिया

बगिया मेरी सबसे प्यारी।
दिखती है ये सबसे न्यारी।
भांति-भांति के फूल खिले हैं।
रंग-बिरंगी लगती क्यारी।

गुलाब तो होता कांटों से भरा।
पर दिखता वो सबसे भला।
संग कांटों के रहने पर भी।
खुश करता सबको वो सदा।

गेंदे की भी बात अलग है।
बसंती और लाल रंग है।
छोटा हो या हो बड़ा।
भगवान की जाता शरण है।

फूल सभी होते हैं सुन्दर।
रंग-रूप का होता बस अंतर।
खुशबू से महकाते चमन हैं।
हो जैसे कोई जादू-मन्तर।

बाल गीत : महेन्द्र जैन

फूल बहुत प्यारे होते हैं

फूल बहुत प्यारे होते हैं,
आँखों के तारे होते हैं।

रंग-बिरंगे जब खिल जाते,
उपवन का भी रूप सजाते।
इनकी खुशबू मन को भाती,
हर दिल पर जादू कर जाती।

ये देवों के चरण सजाते,
घर आंगन की शान बढ़ाते।
सबसे ये न्यारे होते हैं,
फूल बहुत प्यारे होते हैं।

नवम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **शिवानी मौर्या** — 15 वर्ष
   प्लॉट नं. 104-ए, राधा नगर-4,
   मेघपर कुम्भरदी अंजार,
   जिला : कच्छ (गुजरात)

2. **राहुल मौर्या** — 14 वर्ष
   प्लॉट नं. 104-ए, राधा नगर-4,
   मेघपर कुम्भरदी अंजार,
   जिला : कच्छ (गुजरात)

3. **कृति मौर्या** — 10 वर्ष
   कुबेर गंज, हनुमान मंदिर के पीछे,
   शंकर बाजार, कर्वी चित्रकूट (उ.प्र.)

4. **राखी भोजवानी** — 12 वर्ष
   ए-108, शक्ति नगर, गाँधीधाम,
   जिला : कच्छ (गुजरात)

5. **निहारिका असवानी** — 12 वर्ष
   प्लॉट नं. 818, वॉर्ड-11/ए,
   संत कंवरराम सोसाइटी, भारत नगर,
   गाँधीधाम, जिला : कच्छ (गुजरात)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

निआ (विर्क नगर, पानीपत),
सौम्या (गुरु नानक नगर, मुर्तिजापुर),
स्नेहा (ठाकुरपुरा, अम्बाला),
हिमांशु (सरैया, देवरिया),
कबीर (महादेव रोड, दाहोद),
रिद्धि (रमेश नगर, दिल्ली),
समदृष्टि (शालीमार बाग, दिल्ली),
कौसत्व (एअर फोर्स, भुज),
अयान (गीता कॉटेज, भुज),
उन्नति (शिव नगर, कच्छ),
सुगन्धा (आदिपुर, कच्छ),
आदित्य (टाउनशिप, कच्छ),
निमिषा (छयावग, शिमला),
कृष्णा (अनासागर, अजमेर),
अभिरूप (मंडी डबवाली, सिरसा),
रेहान (बलदेव नगर, अम्बाला सिटी),
आयुष वर्मा, सीमा गौड़ (खलीलाबाद),
मानवी (मेन बाजार, लहरागागा),
हार्दिक, कृष्णा, सुमित, अनंत, मुस्कान, याशिका,
मोहित, चिराग, कृष्णा भाषाणी, लहर, (गोधरा)।

फरवरी अंक रंग भरो

पेज नं. 49 पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **10 मार्च** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया'**, निरंकारी कॉम्पलेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) मई अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

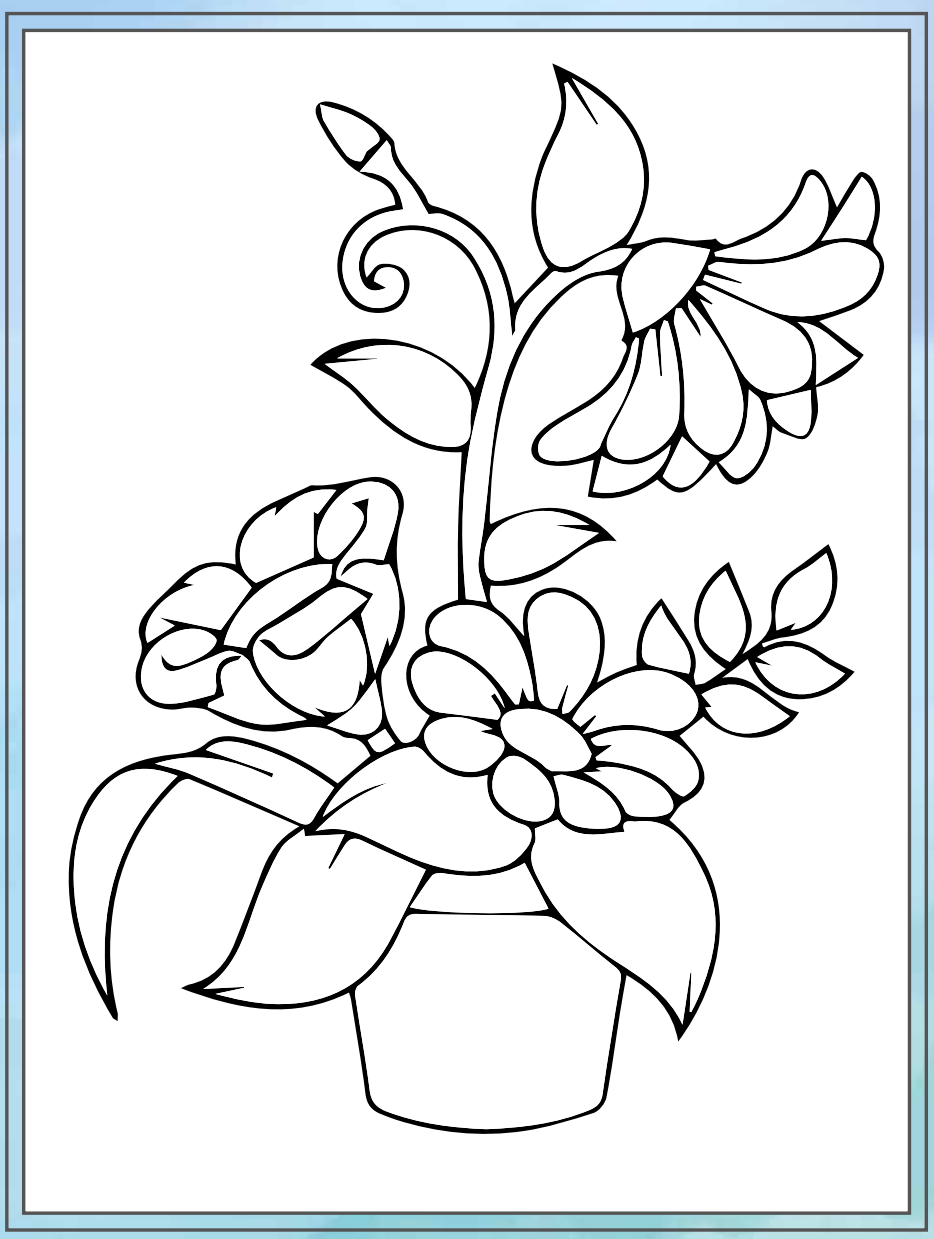

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया बच्चों के चारित्रिक, बौद्धिक एवं वैचारिक गुणों में वृद्धि के लिए यह पत्रिका अतुलनीय योगदान दे रही है।

नववर्ष के शुभारम्भ पर अपनी जान-पहचान वाले बच्चों तक हँसती दुनिया पहुँचाकर एक अमूल्य योगदान हम सभी दे पायें। ऐसी सत्गुरु के चरणों में अरदास करते हैं। – हँसती दुनिया का एक पाठक

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं और मेरा परिवार इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करता है। मेरा सारा परिवार इस पत्रिका को बड़े चाव से पढ़ता है।

हमारा सारा परिवार इस पत्रिका के बारे में बस इतना कहना चाहता है कि यह पत्रिका बच्चों के भविष्य के लिए बहुत ही अच्छी है।

मैं इसमें 'सबसे पहले', ' सम्पूर्ण अवतार बाणी', कविताएं तथा सभी कहानियां पढ़ता हूँ। मुझे इस पत्रिका से बहुत ज्ञान प्राप्त होता है।

– वैभव किशोर (डाँगोली माँट)

मैं और मेरा परिवार हँसती दुनिया का नियमित पाठक हैं। हमें हँसती दुनिया का हर माह बेसब्री से इन्तजार रहता है। मुझे इसमें प्रकाशित शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्द्धक बातें हमारे जीवन का मार्गदर्शन करती हैं।

'सम्पूर्ण अवतार बाणी' की जो व्याख्या दी जाती है वह हमें सत्गुरु के वचनों पर चलने में मदद करती है।

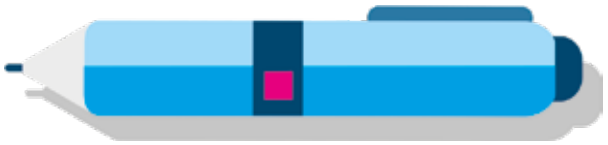

स्तम्भों में 'कभी न भूलो', 'अनमोल वचन' तथा 'पढ़ो और हँसो' मुझे अच्छे लगते हैं।

– प्रदीप कुमार (मोगा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं इसे बड़े चाव से पढ़ता हूँ। मुझे इसकी सभी रचनाएं अच्छी लगती हैं। 'सबसे पहले' में हर बार कुछ न कुछ सीख होती है। यह पत्रिका मेरी सच्ची दोस्त है।

– अभिषेक जैन (परतापुर, मेरठ)

मुझे हँसती दुनिया बेहद पसन्द है। मैं यह पत्रिका सभी को पढ़ाती हूँ तथा खुद भी बड़ी लगन से पढ़ती हूँ। मैं इसका बेसब्री से इन्तजार करती हूँ और मुझे इसमें सम्पूर्ण सामग्री अच्छी लगती है।

– प्रतीक्षा कुशवाह (इटावा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मेरे सहित मेरे परिवार के सभी सदस्य हँसती दुनिया का प्रत्येक माह बेसब्री से इन्तजार करते हैं। मेरे सहपाठी भी हँसती दुनिया का प्रत्येक अंक पढ़ते हैं और इसकी प्रशंसा करते हैं।

हम पढ़ने के बाद हँसती दुनिया को आगे किसी और को पढ़ने दे देते हैं।

– अतुल गोपाल (रामनगर, दरभंगा)

पहेलियों के उत्तर

1. मोबाइल, 2. अजगर, 3. समय, 4. छिपकली, 5. मच्छर, 6. मछली, 7. जलेबी, 8. सूरजमुखी, 9. लेटर बॉक्स, 10. नारियल।

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा नियमित रूप में प्रकाशित होने वाली

पत्र-पत्रिकाएं

सन्त निरंकारी

❖ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली **'सन्त निरंकारी'** विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें सद्गुरु वचनामृत एवं अनुभवी लेखकों की तर्कपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं।

एक नज़र

❖ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र **'एक नज़र'** में सद्गुरु माता जी के दिव्य वचन एवं मिशन की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित होते हैं।

हँसती दुनिया

❖ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक **'हँसती दुनिया'** में रोचक कहानियां, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं एवं चित्रकथाएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता हेतु सम्पर्क करें :-

Tel. : 011-47660200 (Extn. : 862)
Email : patrika@nirankari.org

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया-

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को फोन नं. 011-47660200 अथवा Help Line 011-47660360 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

-सुलेख 'साथी'

प्रबन्ध सम्पादक, पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्पलेक्स, बुराड़ी रोड़, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।